।।श्री सुरभ्यै नमः।।

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त

वेदलक्षणा गो नवरात्र आराधना महोत्सव

22 से 31 अक्टूबर 2025

आयोजक – श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा

अभिनव ब्रजमण्डल मनोरमा गोलोक नंदगांव केसुआ, रेवदर, सिरोही राजस्थान

मासिक

कामधेनु कल्याण पत्रिका

अक्टूबर 2025

वर्ष: 02 Website:-www.godhampathmeda.org Email :- K.k.p.pathmeda@gmail.com अंक: 07

सुरभि उवाच

हे सनातन धर्म के महान संतों और ऋषि–मुनियों!

आप सभी को मेरा प्रेमभरा मंगलमय शुभ आशीर्वाद!

भारतवर्ष की पावन धरती पर सनातन धर्म की पताका गो और साधु–सन्तों के कारण ही फहरा रही है। युग बदलते गये, समय बदलता गया पर सनातन धर्म आज भी अक्षुण्ण है। मेरे सनातन धर्म को आप जैसे महान संतों के द्वारा ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक, एक युग से दूसरे युग तक वैसा का वैसा पहुँचाया जा रहा है। आपको तो इतिहास–पुराणों से ज्ञात ही है कि सनातन धर्म के साधु–सन्तों और ऋषि–मुनियों के आश्रम गोवंश से भरे रहते थे। एक–एक आश्रम पर लाखों–लाखों गऊएं निवास करती थी।

हे मेरे ज्ञानी पुत्रों! यह मानव सभ्यता सनातन धर्म पर अवलंबित है और सनातन धर्म की आधारशिला मेरा गोवंश है। आज चारों ओर व्यवस्थाओं में लोभी, लालची, धनलोलुप मानवाकार दानव घुस गये हैं और देश के शासनतंत्र में भी उनका ही बोलबाला रहता है। अधिकतर साधु–संत और उनके आश्रम भी गोविहीन हो गये हैं। कोई गाय की बात भी नहीं कर रहा है। इससे सनातनियों में गो के प्रति श्रद्धाभाव का विलोप हो रहा है। देश के राजा और प्रजा ने गो से मुख मोड़ लिया है। इसका लाभ गोविरोधी शक्तियाँ उठा रही है। जिस देश में गाय के घी–दूध की नदियों बहती थी आज उसी देश में गाय के रक्त की नदियों बह रही है और गोमांस को नमक–मिर्च की तरह बेचा जा रहा है। देश का गोवंश निराश्रित, उपेक्षित और अकेला हो जाने के कारण आज अपने प्राणों की रक्षा के लिये त्राहि–त्राहि कर रहा है।

हे सनातन की धर्म ध्वजा संतों! सनातन धर्म और संतत्व की मूल गाय को आपके ही सामने योजनाबद्ध कुचक्र से नष्ट किया जा रहा है और आप अपने ही नाश को चुपचाप बैठे देख रहे हैं? आप संतों और ऋषियों पर भक्तों द्वारा श्रद्धा और विश्वास किया जा रहा है। वे आपका ही अनुसरण कर रहे हैं। आपके आश्रम गोविहीन होने से आज आपके भक्तों के घर भी गोविहीन हो गये हैं। इसलिये मेरे पुत्रों ! सनातन धर्म हमारे पूर्वजों से जैसा हमको मिला वैसा ही अगली पीढ़ी को सौंपने के लिये, उसे विकृति से बचाने के लिये इस धरती पर गोवंश की रक्षा, वृद्धि और गोवंश के मान–सम्मान की रक्षा अतिआवश्यक है।

हे मेरे प्राण प्रिय संतों और ऋषि–मुनियों! आज की परिस्थितियों को देखते हुए यह परमावश्यक हो गया है कि वेदलक्षणा गो की महत्ता को लोग समझें और ऐसी पवित्र व सर्वदेवमयी गो तथा उसके वंश को अपने हृदय स्थल पर विराजमान करावें, इसके लिये आपको अपना जीवन गोसेवा में लगाना होगा। देश की वर्तमान परिस्थितियों में अपने हाथों से प्रत्यक्ष गोसेवा करके ही मेरे वंश की रक्षा हो सकती है और यही धर्म की पुनर्स्थापना है। आपके इन सद्प्रयासों से गोसेवा में एक महान क्रांति का सूत्रपात होगा तथा आने वाला समय आपका और सनातन धर्म का होगा।

एक बार पुनः आप सभी को मेरा मंगलमय शुभ आशीर्वाद।

तुम्हारी ,,, प्यारी माँ सुरभि

।। वन्दे धेनुमातरम्।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्ष:2

कामधेनु-कल्याण

अंक:7

आश्विन मास शुक्लपक्ष वि.सं. 2082 रा.शाः 1947 अक्टूबर-2025

1. **श्री कामधेनु कृपा प्रसाद** - परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराज 04
2. **वेदवाणी में गो महिमा** - संकलित 07
3. **ठाकुरजी कब आओगे** - भगवत प्रेरणा से 09
4. **श्रीमदभागवत कथा** - पू. द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज 11
5. **भक्त चरित्र** - पू. द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज 14
6. **गीत** - गोसेवक श्री धनराज जी चौधरी 15
7. **गीता ज्ञान** - पू.परमहंस स्वामी श्री प्रज्ञानानन्द जी महाराज 16
8. **श्री राम कथा** - पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज 18
9. **श्री शिव महापुराण कथा** - पू. गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज 21
10. **भज गोविंदम्** - श्रीमदआदिशंकराचार्य द्वारा रचित 24
11. **परमपद (जीव का अपना असली घर)** - साभार साधक संजीवनी 25
12. **श्री मद्भागवत कथा** - गोवत्स श्री विट्ठलकृष्ण जी महाराज 27
13. **जाऊँ तो जाऊँ कहाँ** - सम्पादक, अम्बा लाल सुथार 29
14. **क्या आपको शुद्ध सात्विक आहार मिल रहा है** - सम्पादक, अम्बा लाल सुथार 31
15. **संस्था समाचार** - सितम्बर माह में हुए विभिन्न घटनाक्रमों का संक्षिप्त विवरण 32

गाय बिना गति नहीं

वेद बिना मति नहीं

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्द जी महाराज

Web: www.godhampathmeda.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादकीय पता

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन-पथमेड़ा,
त.-सांचोर, जि.-जालोर (राज.) 343041

Mob. No. 9828052638

k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादक

अम्बा लाल सुथार

10 वर्षीय सदस्यता शुल्क-2100 रुपये मात्र

मूल्य:20 रुपये

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

गोसेवा भारतीय संस्कृति है

गाय के रोम रोम में देवताओं का निवास माना गया है। उसे सुरभि, कामधेनु, अर्च्या, पूज्या, विश्व की आयु, रुद्रों की मां, वसुओं की पुत्री आदि कहा गया है। पूज्या गोमाता मनुष्यों के, देवताओं के, ऋषियों के सबके लिए पूजनीया है। स्वयं सच्चिदानंद परमात्मा अवतार धारण करके पूज्य भाव से गोमाता की सेवा करते हैं और गोपालन लोक संस्कृति का विस्तार करते हैं। भगवान राम और कृष्ण के अवतार भगवती गोमाता की महिमा की विस्तार हेतु ही हुए हैं। **गो द्विज धेनु देव हितकारी, कृपा सिंधु मानुष तनुधारी**। गोमाता के लिए भगवान अवतरित होते हैं और श्री गोपाल श्रीकृष्णा तो गायों के लिए ही अवतरित होते हैं। उनके अवतार का प्रधान हेतु ही गो महिमा को पुनर्स्थापित करना, गोपालन लोक संस्कृति का विस्तार करना और गाय के सुख में लगे हुए मनुष्यों को संबल प्रदान करना, उनको प्रोत्साहित करना यही उनके श्रीकृष्ण अवतार का प्रधान हेतु है।

बाल्य काल से ही गोपों को और गोपियों को बहुत बड़ा सहयोग करते हैं। वे खेल-खेल में ही सैकड़ो वर्षो से जो असुर गो संस्कृति को क्षति पहुँचाने थे, ऐसे असुरों को 11.50 साल की आयु होते-होते सभी को यमराज के घर भेज दिया। एक-एक पूतना से लेकर आप देखो तो कितने असुर आए 11.50 वर्ष की आयु तक भगवान जब गायों के बीच में मिले तो यह सारे के सारे असुर भगवान को क्षति पहुंचने के लिए आए। ये केवल भगवान श्री कृष्ण को मारने के लिये आए ऐसी बात नहीं, ये पहले से ही गोपों को, गोपियों को, गोओं को सबको दुःख देते ही थे। ये सब कालिया नाग के भाई थे। कालिया नाग जहाँ रहता था, वहाँ का जल पीने से गोएं पधार जाती थी। वह यमुना जी के जल में जहरीला विष छोड़ता था जिसको पीने से गोप-गोपियों, पशु पक्षी आदि सब मर जाते थे। ऐसे ये सब दुष्ट, एक से बढ़कर एक तर्णासुर, बकासुर, अघासुर आदि की सबकी लाईन ही लग गई थी। जब तक ठाकुर जी ब्रज में बिराजे, उन्होंने सबको ठिकाने लगा दिया। अंत में कंस बचा था, उसको भी यमुना जी के पार जाकर यमपुर भेज दिया था।

उसके बाद में उन्होंने शासन करने की जो नीति थी उसे गोमाता के अनुकूल बनाने के लिए अर्जुन सहित पांडवों को निमित्त बनाकर इस धरती पर जितने गो विरोधी थे, गो घाती थे, गो हत्यारे थे उन सबको जय श्री राम कराया। भगवान श्री कृष्ण का तो अवतार ही पूरा का पूरा केवल और केवल गोमहिमा स्थापित करने और गोपालन लोक संस्कृति का विस्तार करने के लिये हुआ। द्वारिकापुरी में भी भगवान प्रतिदिन 13000 गोएं बहुत ही सुन्दर-सुन्दर स्वरूप में और मन इच्छित दूध देने वाली स्वर्ण के श्रृगों से सज्जित दान करते थे।

यह गिर गाय जो है यह ठाकुर जी की बहुत सीधी गोओं में से है। ऐसे तो यह भी सींग आदि हिलाती है लेकिन ढ़ीली ढ़ाली है, ठण्डी है। इसके बैल खेती के ज्यादा काम नहीं आते हैं। दूसरी एक और गाय है जो ठाकुर जी की गायों में जो बड़ी शौर्यवान, बड़ी सोम्यवान है, ब्रह्म स्वरूपा है, उसे लोग कांकरेज भी कहते हैं वह द्वारिका से लेकर बड़ोदरा तक और इधर जोधपुर के बीच में यहाँ पर पूरे क्षेत्र में यह अलग-अलग रूपों में बिराज रही है।

यह बहुत ही शौर्यवान है। यह अपने सेवक की रक्षा करती है। इनका दूध पीने वाले भी शूर और सती होते हैं। बहुत सारी सतियों और शूरवीर इनका दूध पीने से हुए थे। उनके बैल कृषि के लिए बड़े उपयोगी होते हैं। इसलिए सौराष्ट्र प्रदेश में गिर गाय की बहुलता होते हुए भी कृषि के लिए हजारों सालों से कांकरेज क्षेत्र के बैल ले जाते थे। यह कांकरेज, कानम, उत्तर गुजरात, उत्तर पश्चिम राजस्थान के बहुत बड़े क्षेत्र में यह काकरेज दस्ल फैली हुई है। इध ार बाड़मेर से जालोर, जोधपुर, पाली, सिरोही, बनासकांठा, पाटन, कांकरेज, कच्छ, सुरेंद्रनगर, मेहसाणा, खेड़ा से लेकर बड़ौदा तक यह गोमाता थी। अभी उसका कुछ वंश है। यह बहुत सुंदर गाय है।

ऐसे ही साहिवाल बहुत सुन्दर गाय है। रेड सिंधी, राठी, 8 नस्लें भगवान के अष्ठ वर्ग की गामाताओं में से हैं और ये अभी तक आज से 50-60 वर्ष पहले तक ये सामान्य रूप से गोपालकों के घर में 24 घण्टों में 16 से लेकर 40 लीटर तक दूध देती थी। 50 साल में स्वाधीन भारत में गोपालन की नीतियों का कोई विकास नहीं हुआ। विदेश के लोग हमारे यहाँ से गोमाता ले जाकर कांकरेज गाय से 52 लीटर दूध लिया 24 घंटे में और गिर से 70 लीटर दूध लिया। इतना उन्होंने हमारी इसी नस्ल को बढ़ाया पर हम लोगों ने पिछले 5-7 दशक में गोपालन की नीति की उपेक्षा की। सर्वदेवमयी पूज्या गोमाता की गो पूजा, गो भक्ति गो मंत्र आदि शास्त्रों में उनके विस्तार बताए गए कि गाएं पूज्या है, उनकी पूजा करने से, उनके मंत्र जाप से खूब लाभ होता है और हमारे पूर्वज गो पूजन करते आए हैं। शास्त्रों में उनके विस्तार बताए गए हैं। हमारे सभी संस्कारों में गोपूजन पहला है। गोपूजन के बाद ही हमारे सभी श्रेष्ठ कार्य पूर्ण होते हैं और सभी प्रकार के हिंदुओं के 16 संस्कार गोमाता के माध्यम से संपन्न होते हैं। गो पूजन, गोदान, पंचगव्य पान, पंचगव्य प्रक्षालन, पंचामृत आदि-आदि के माध्यम से सब संस्कार संपादित होते हैं। गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक के सारे संस्कार गोमाता को केंद्र में रखकर होते हैं। सब कुछ पूजा गोमाता के माध्यम से संभव है। यज्ञ-याज्ञ पूजा-पाठ ये सब कुछ पूज्या गोमाता आदि सब गोमाता के माध यम से ही सम्भव है।

ये सब बातें हैं। सब प्रकार से गोमाता हमारा अभ्युदय करती है और परलोक में भी वेतरनी से तारती है। वत्सोत्सर्ग, बछड़े का नंदी बनाकर गोसंवध नि के लिये देना हमारे शास्त्रों में बड़ा भारी महात्म्य है इसका। गोचर भूमि छोड़ना बड़ा भारी पुण्य माना गया है। गाय का यह आध्यात्मिक तथा धार्मिक महत्व चाहे आज किसी के समझ में ना आए और वह अलग बात है, आध्यात्मिक जगत का यह रहस्य भौतिक साधनों से समझ में आ भी नहीं सकता श्रद्धालु पुरुष शास्त्र प्रमाणों से तथा अंतर्दर्शी महात्मा लोग ऋतंभरा प्रज्ञा के द्वारा अनुभव से इसे जान सकते हैं।

भगवती गोमाता की महिमा का कोई वारापार नहीं है। गोसेवा भारतीय संस्कृति है और धार्मिक कर्तव्य भी है। गोसेवा और गोवंश की उन्नति भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग है। हिंदू बौद्ध जैन सिख सभी धर्मावलम्बियों के लिए गोरक्षा धार्मिक दृष्टि से मुख्य कर्तव्य है। अत: गोरक्षा का आध्यात्मिक तथा धार्मिक दृष्टिकोण से भी बड़े महत्व का है। कदापि उपक्षेन्य नहीं है इसका सांस्कृतिक महत्व तो सर्वविदित है। भारत वर्ष में अत्यंत प्राचीन काल से बड़े-बड़े महापुरुषों द्वारा गौ सेवा और गोपालन होता आया है। हमारे यहाँ रघुवंशीय परंपरा में राजा दिलीप नंदिनी की गो के लिए अपने प्राण देने को प्रस्तुत हो गए थे। राजा नृग ने असंख्य गायें दान की थी। भगवान श्री राम का अवतार ही तो गो ब्राह्मण हितार्थ हुआ था उन्होंने 10 सहस्त्र करोड़ एक खरब गाएं विद्वानों को विधि प्रावधान की थी यह वाल्मीकि रामायण के

प्रथम अध्याय में आता है और इतना ही नहीं भगवान राम जी तो गवां कोटि है ही, भगवान श्री कृष्ण का बाल्यकाल तो गोसेवा में ही व्यतीत हुआ। उन्होंने बाल्यकाल में नंगेपांव वनों में घूम-घूम कर गोचारण किया इससे उनका नाम गोपाल पड़ा। कामधेनु ने अपने दूध से, देवराज इंद्र ने ऐरावत हाथी सूंड द्वारा लाए हुए आकाशगंगा से भगवान श्री कृष्ण का अभिषेक करके उनको गोविंद गोविंद गोविन्द नाम से संबोधित किया।

द्वारिका में वे पहली-पहली बार ब्यायी हुई जैसा कि हमने पूर्व में बताया कि 13000 गायों का, तो 13000 नहीं 84 ऊपर है, 13084 गायों प्रतिदिन दान करते थे। युधिष्ठिर के यहाँ गायों के 10000 वर्ग थे प्रत्येक वर्ग में आठ लाख गायें होती थी। अगर आप पढ़े लिखे हो तो हिसाब लगा लो कितनी गायें थी उनके पास? लाख-लाख दो-दो लाख के तो और भी बहुत से वर्ग थे। इस गो विभाग की सारी व्यवस्था का भार सहदेव पर था। वे गो विज्ञान के महान पंडित थे। नन्द और उपनन्द के पास तो असंख्य गोमाताएं थी और वे उनका भली भांति रक्षण पालन और संवर्धन करते थे।

अभी पिछले बौद्ध काल में भारत में कितनी बड़ी संख्या में गोपालन होता था इसके लिए एक ही प्रमाण पर्याप्त होगा- भाई श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार जी कहते हैं कि धनंजय सेठ ने अपनी कन्या के विवाह में उसे गाएं देने की इच्छा से अपने सेवकों से कहा कि जाओ छोटा गोकुल खोल दो और एक-एक कोस के अंतर पर नगाड़ा लिए खड़े रहो, 140 हाथ की चौड़ी जगह बीच में छोड़कर दोनों और आदमी खड़े कर दो जिसमें गायें फेल ना सके। जब-जब लोग ठीक खड़े हो जाएं, जब सारे लोग ठीक खड़े हो जाएं तब नगाड़े बजा देना। सेवकों ने ऐसा ही किया। जब गाएं एक कोस पहुँची तब नगाड़ा बाजया, फिर जब दो कोस पहुंची तब नगाड़ा बाजया और अंत में तीन कोस पहुँचने पर फिर और नगाड़ा बाजया। 3 कोस की लंबाई और 140 हाथ की चौड़ाई के मैदान में इतनी गाएं भर गई कि वे एक दूसरे के शरीर को रगड़ती हुई चली तब धनंजय ने कहा बस अब दरवाजा बंद कर दो। सेवकों ने दरवाजा बंद किया परंतु बंद करते-करते 60 हजार गाएं, 60 हजार बैल और 60 हजार बछड़े निकल गए बंद करते-करते। अब बताओ कितना गोवंश उन्होंने दहेज में दिया? अब अनुमान कीजिए इस छोटे गोकुल में कितनी गायें रही होगी? उस समय गोपालकों के गोकुल में लाखों करोड़ों की संख्या में गोधन था। गौतम नामक बड़े गायों के व्यापारी होते थे जिनके पास लाखों की संख्याओं में गोओं के दल के दल थे।

यह थी हमारी गो संपत्ति और यह था हमारा गोपालन। गाय को अब भी गांवों के लोग धन कहते हैं, धेनु कहते हैं। बड़े ही दुःख की बात है कि इस गोपालकों के देश में आज इतना पतन हो गया? उनके अपने ही राज्य में गो का वध हो रहा है। गोओं के रक्त से भारत की पवित्र भूमि लाल हो रही है और इतना ही नहीं गायों की गोचर भूमि नष्ट की जा रही है।

अंग्रेजी शासन के पहले गोरक्षा आंदोलन की कोई आवश्यकता ही नहीं थी। उस समय सर्वत्र पर्याप्त गोचर भूमि थी। बहुत अधिक मात्रा में चारा उत्पन्न होता था इसलिए गायों को जीवन भर पूरा चारा मिलता था। बड़े विशाल और बलवान बैल होते थे। एक-एक हल में 9 या 10 जोड़े बैलों तक जुतते थे। अच्छा चारा दाना मिलने तथा सेवा की सुव्यवस्था होने के कारण गोवंश बीमार भी नहीं होता था। आज तो कितनी भयंकर-भयंकर बीमारियों हो रही है गोवंश में और इसमें भी एक भयंकर दुष्ट बीमारी हमारे वेद लक्ष्मणा गोओं में प्रवेश कर चुकी है। गुजरात और राजस्थान के बहुत बड़े भूभाग पर लाखों गाएं उस बीमारी की ...शेष अगले अंक में

वेदवाणी में गो महिमा

संकलित

हम सब जानते हैं कि व्यवहारिक जगत में कोई भी उपयोगी या उत्तम वस्तु या व्यक्ति का एक दो जगह प्रमाण मिल जाता है तो उस आधार पर उसे हम अच्छा मानकर उसका उपयोग करने लगते हैं। सनातन धर्म के वेद-पुराण, महाभारत और अन्यान्य शास्त्र तथा महापुरुषों की वाणी में ईश्वर और गाय के बारे में जितना कहा गया है उतना शायद ही किसी अन्य के बारे में वर्णन हो। 4-5 वर्ष पूर्व की बात है 31 दिसम्बर को अंग्रेजी वर्ष पूर्ण होने पर एक टीवी चैनल में बीते वर्ष की विभिन्न घटनाओं को बताया जा रहा था, उसमें यह बताया गया कि उस बीते वर्ष में मिडिया में सबसे अधिक बार कौनसे शब्द का प्रयोग हुआ तो बताया गया कि बीते वर्ष में **गाय** शब्द का सबसे अधिक बार प्रयोग हुआ है। यह तो जो मिडिया के रेकार्ड के अनुसार बताया गया जबकि आज हम भारतीय दिनभर कितनी बार गाय पर चर्चा कर लेते हैं, वो तो कहीं रेकार्ड पर आता भी नहीं है। यह चर्चाएं तो छपने वाले भाग से अनन्त गुणा अधिक है।

जो विद्वान हैं और गो के बारे में जानते हैं, जिनको श्रद्धा विश्वास है, जिनके जीवन में गोमाता है, जिनके घर में गोमाता है उनकी बात नहीं है, पर जिनको गाय की महत्ता पर अब तक कोई विशेष श्रद्धा विश्वास नहीं है उनको भी एक बार तो सोचना चाहिये कि गाय में कुछ तो ऐसी विशेषताएं होगी कि सनातन संस्कृति में गाय पर इतनी बात क्यों हुई और हो रही है। संसार में उपलब्ध साहित्य में वेदों को सबसे पुराना माना जाता है, वे भी गाय के वर्णन से भरे पड़े है। एक बार भी कहीं लिखा मिल जाता कि गाय सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, इतना भर काफी था, फिर भी बार-बार अनेकों प्रकार से गाय की महत्ता, उसके उपयोगी होने के कारण वेद पुराणों में लिखे होने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उपलब्ध जानकारी में पुराने से पुरानी मानव सभ्यता में गाय का जन-जन के जीवन में विशेष और उच्च स्थान था।

गाय मनुष्य के लिये अमूल्य होने के कारण वेदों और पुराणों में मनुष्य के लिये गोसेवा के तीन कर्तव्य बताये गये हैं

1. गो-सेवाः- गायों को भोजन, पानी, आश्रय, औषधि आदि के द्वारा सुखी रखना।
2. गो-पूजाः- गाय को दिव्य माता मानकर पूजन करना, ईश्वर की भांति उसमें सदैव पूज्यभाव रखना।
3. गो-रक्षाः- गायों की रक्षा करना और उनके प्रति किसी भी प्रकार की हिंसा रोकना।

वेदों और पुराणों में कहीं गाय के लिये ईश्वर से प्रार्थना और कामनाएं की गई है तो कहीं गाय को ही ईश्वर का रूप मानकर उससे अपने लिये प्रार्थना और कामना की गई है और उसके गव्यों की विशेषताओं के वर्णन से तो ाास्त्र भरे पड़े हैं।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजङ्गमं ।
तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरं ।।

जिसने समस्त चराचर जगत् को व्याप्त कर रखा है, उस भूत और भविष्य की जननी गोमाता को मैं मस्तक झुका कर प्रणाम करता हूँ।

गोम्यो यज्ञाः प्रवर्त्तन्ते गोभ्यो देवाः समुत्थिताः।
गोभ्यो वेदाः समुद्गीर्णाः सषडंगपदक्रमाः ।।

गौओं के द्वारा यज्ञ चलते हैं, गौओं से ही देवता हुए हैं। छओं अंगों सहित वेदों की उत्पत्ति गौओं से ही हुई है।

गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गेऽपि पूजिताः।
गावः कामदुहो देव्यो नान्यत्किञ्चित्परं स्मृतं ।।

गौएं स्वर्ग की सीढ़ी हैं, स्वर्ग में भी गौओं की पूजा होती है। गौएं अभिलाषित फल देने वाली हैं, गौ से बढ़कर उत्तम और कोई वस्तु नहीं है।

गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किञ्चिदिहाच्युत ।

कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव ।
गवां प्रशस्यते वीर सर्वपापहरं शिवम् ।।

(महर्षि च्यवन ने राजा नहुष से कहा)- अपनी मर्यादा से कभी च्युत न होनेवाले हे राजेन्द्र ! मैं इस संसार में गौओं के समान दूसरा कोई धन नहीं देखता हूँ। वीर भूपाल! गौओं के नाम और गुणों का कीर्तन तथा श्रवण करना, गौओं का दान देना और उनका दर्शन करना- इनकी शास्त्रों में बड़ी प्रशंसा की गयी है। ये सब कार्य सम्पूर्ण पापों को दूर करके परम कल्याण की प्राप्ति कराने वाले हैं।

मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः।
वृद्धिमाकांक्षता नित्यं गावः कार्याः प्रदक्षिणाः।।

गौएँ सम्पूर्ण प्राणियों की माता कहलाती हैं। वे सबको सुख देने वाली हैं। जो अपने अभ्युदय की इच्छा रखता हो, उसे गौओं को सदा दाहिने करके चलना चाहिए।

शृंगमूलं गवा नित्यं ब्रह्मबिष्णु समाश्रितौ।
शृंगाग्रे सर्वतीर्थानि स्थावराणि चराणि च।।

गौओं के सींग के मूल में ब्रह्मा और विष्णु निवास करते हैं, सींग के अग्रभाग में सब तीर्थ और स्थावर जंगम रहते हैं।

शिरोमध्ये महादेवः सर्वभूतमयः स्थितिः।
गवामंगेषु निष्ठान्ति भुवनानि चतुर्दश ।।

गौओं के शिर के बीच में सारे संसार के साथ शिवजी निवास करते है। गौओं के अंगों में चौदहों मुवन रहते हैं।

गावो लक्ष्म्याहाः सदा मूलं गोषु पाप्मा न विद्यते।
अन्नमेव सदा गावो देवानां परमं हविः ।।

गौएँ सदा लक्ष्मी की मूल हैं। गौओं में पाप की स्थिति नहीं होती है। गौएँ ही मनुष्यों को सर्वदा अन्न और देवताओं को हविष्य देने वाली हैं।

स्वाहाकारवषट्कारौ गोषु नित्यं प्रतिष्ठितौ ।
गावो यज्ञस्य नेत्र्यो वै तथा यज्ञस्य ता मुखं ।।

स्वाहा और वषट्कार सदा गौओं में ही प्रतिष्ठित होते हैं। गौएँ ही यज्ञ का संचालन करने वाली तथा उसका मुख हैं।

प्राप्त्या पुष्ट्या लोकसंरक्षणेन
गावस्तुल्याः सूर्यपादैः पृथिव्यां।
शब्दश्चौकः संततिश्चोपभोगा-
स्तस्माद् गोदः सूर्य इवावभाति।।

प्राप्ति, पुष्टि तथा लोकरक्षा करने के कारण गौएँ इस पृथ्वी पर सूर्य की किरणों के समान मानी गयी हैं। एक ही 'गो' शब्द धेनु और सूर्य-किरणों का बोधक है। गौओं से संतति और उपभोग प्राप्त होते हैं, अतः गोदान करने वाला मनुष्य किरणों का दान करने वाले सूर्य के ही समान समझा जाता है।

योऽग्रं भक्तं किञ्चिदप्राश्य दद्याद् गोभ्यो नित्यं
गोव्रती सत्यवादी।
शान्तोऽलुब्धो गोसहस्रस्य पुण्यं संवत्सरेणाप्नुयात्
सत्यशीलः ।।
यदेकभक्तमश्नीयाद् दद्यादेकं गवां च यत्।
दशवर्षाण्यनन्तानि गोव्रती गोऽनुकम्पकः ।।

जो गोसेवा का व्रत लेकर प्रतिदिन भोजन से पहले गौओं को गोग्रास अर्पण करता है तथा शान्त एवं निर्लोभ होकर सदा सत्य का पालन करता है, वह सत्यशील पुरुष प्रतिवर्ष एक सहस्र गोदान करने के पुण्य का भागी होता है। जो गोसेवा का व्रत लेने वाला पुरुष गौओं पर दया करता और प्रतिदिन एक समय भोजन करके एक समय का अपना भोजन गौओं को दे देता है, इस प्रकार दस वर्षों तक गोसेवा में तत्पर रहने वाले को अनन्त सुख प्राप्त होते हैं।

घासमुष्टिं परगवे दद्यात् संवत्सरं तु यः।
अकृत्वा स्वयमाहारं व्रतं तत् सार्वकामिकं।।

जो एक वर्ष तक प्रतिदिन स्वयं भोजन के पहले दूसरे की गाय को एक मुट्ठी घास खिलाता है, उसका वह व्रत समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला होता है।

ईश्वरः स गवां मध्ये।

गौओं के मध्य में ईश्वर की स्थिति होती है।

गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं महत्।

गौएँ मानवों के जीवन का प्रतिष्ठा रूपी परम धन हैं और गौएँ कल्याण की परम निधान हैं।

ठाकुरजी कब आओगे

(भगवत प्रेरणा से)

पिछले अंक से आगे.........

जो गोभक्त जीवित रह गये, मगर अब कुछ कर नहीं पा रहे थे, वे देश में गोवंश पर हो रहे अत्याचारों को देख-सुनकर बहुत करूण पुकार करते हैं- हे ठाकुरजी! तुम कब आओगे? दुष्ट आपकी प्यारी दुलारी गैया को मार रहे हैं। हम अब असहाय हैं, हमारा कोई वश नहीं चल रहा है।

सांवरी सूरत वारे गोविन्द गोपाल प्यारे,
गैया तेरे बिन तो, तड़प मर जायेगी।
एक बार गिरधर, धरा पर उतरकर,
गायों की हालात देख, तेरी आँख भर आयेगी।
छोड़कर मधुर धुन, गायों का रूदन सुन
तेरी बांसुरी भी आज अपनी, राग छोड़े जायेगी।
शहरों में जो गायों के, बीच में से जो गुजरोगे,
आपके भी कलेजे से, पीर उठ आयेगी।

गाय और गोभक्तों की दर्द भरी पुकार ठाकुरजी ने सुन ली। ऐसे तो ठाकुरजी चाहे तो क्या नहीं कर सकते? एक पलक झपकते ही ब्रह्माण्ड को उलट-पुलट कर दे। उनको कहीं आना जाना नहीं पड़ता है, पर जीवों के भी अपने कुछ कर्म संस्कार होते हैं। हम अपने और अन्य प्राणियों के दु:ख निवृति हेतु ईश्वर पर दबाव नहीं डाल सकते, प्रार्थना कर सकते हैं। जीवों के कल्याण हेतु जो उचित होगा, ईश्वरीय विधान से वो ही होगा।

गाय और गोभक्तों की पुकार तो प्रभु ने सुन ली, मगर समय अब तक भगवान के अवतार का आया नहीं। गो भारतवसियों के हृदय से निकल रही थी, इसलिये उनके घरों से भी निकलकर गोमाता निराश्रित हो रही थी। प्रभु को तो पूज्या गोमाता की महिमा को पुन: जन-जन के हृदय में स्थापित करना था। जब भारतवासी गाय के महत्व को पुन: समझ लेगा तो गोसेवा अपने आप होने लगेगी तथा पुन: गोमाता उसके हृदय और घर में निवास करने लगेगी।

इसलिये गोपाल कृष्ण भगवान ने यह तय किया कि गोसेवा का संकल्प किये हुए अपने किसी निज सखा को धरती पर साधु के रूप में भेजा जाय जो अपने हाथों लाखों गोमाता की सेवा कर संसार को गोसेवा की प्रेरणा दे। गोलोक में ठाकुर बालकृष्ण भगवान ने अपने एक प्रिय सखा को बुलाया और समझाया कि हम अपने कार्य से आपको धरती पर भेज रहे हैं, यद्यपि आपका गोसेवा का पूर्व में किया संकल्प अभी अधूरा है, उसे पूरा करने का अवसर भी है। आपको वहाँ संसार भर में गोसेवा का रचनात्मक कार्य कर, अपने हाथों गोसेवा कर लोगों को प्रेरणा देनी है। हम आपके हरदम साथ हैं, सारा प्रबंध हम करते रहेंगे, आपको निमित्त बनना है। बाद में हम आपको वहाँ सुअवसर आने पर मिल भी जायेंगे। सखा ने अपना अधूरा संकल्प पूरा करने में अपने सखा श्री गोपाल कृष्ण का सहयोग और कृपा पाकर धरती पर जन्म लेने की स्वीकृति दे दी। गोलोक में अपने सखा को धरती पर भेजने की सभी सखा मिलकर तैयारी करने लगे।

सुअवसर आने पर माघ माह शुक्ल पक्ष बसंत पंचमी विक्रम संवत् 2023, अंग्रेजी तिथि अनुसार 14 फरवरी 1967 के दिन भारत की धरा पर मारवाड़ क्षेत्र के जालोर जिले की सांचोर तहसील के गाँव वासन चौहान में पूज्या माता श्रीमती नेनूकंवर जी और पूज्य पिताजी प्रागजी (रावल) रायगोर राजपुरोहित ब्राह्मण परिवार में गोसंस्कृति की पुन:स्र्थापना की किलकारी गूंजी। यह एक व्यक्ति का नहीं, गोलोक संस्कृति का आप श्रीमानों के घर जन्म हुआ और वेदलक्षणा गोवंश और गोभक्तों में एक हर्ष की लहर दौड़ गई। यद्यपि अभी यह बात गोभक्तों में

उचित अवसर आने पर ही प्रकट होनी है, तथापि उनमें दिव्य खुशी छा गई।

धरती पर जीव मात्र के जन्म, जीवनकाल और मरण के नियम है, भगवान स्वयं भी जब अवतार लेकर आते हैं तो इन्हीं नियमों का पालन करते हैं। अचानक जादू की तरह कुछ नहीं होता है। आपश्री को बचपन से ही अपने पूज्य माता-पिता एवं मातामह (नानाजी) श्री मगारामजी राजगुरु से धार्मिक, आध्यात्मिक एवं गोसेवा के संस्कार प्राप्त हुए। आपश्री में बाल्यकाल से स्वाभाविक गोप्रेम था। संवत् 2025-26 के भयंकर दुष्काल में गोवंश को भूख-प्यास से तड़पता हुआ देखकर आप अत्यन्त व्याकुल होकर रोने लग जाते थे। उस समय अकाल प्रभावित थार प्रदेश से गोपालक किसानों के समूह अपने गोवंश को साथ लेकर गुजरात राज्य में जाते हुए आपश्री की जन्मभूमि वासन चौहान गाँव में बनी प्याऊ पर गोवंश को जल पिलाने के लिए ठहरते थे। आपके परिवार की ओर से उस जगह गोवंश तथा गोपालकों के लिये राहत शिविर के रूप में जल प्याऊ व अन्न क्षेत्र चलता था। वहाँ पर एक बड़े छप्पर में भोजन तैयार होता और भूखे गोवंश के लिये कुछ चारा भी रखा रहता। जलपान उपरांत खेजड़ी के बड़े-बड़े वृक्षों के नीचे गोपालक किसान गोवंश सहित विश्राम करते और फिर आगे प्रस्थान करते। वृद्ध और अशक्त गोवंश को वहाँ छोड़ देते थे। उनकी देखभाल वासन चौहान गाँव के धर्मात्मा ग्रामवासी गण करते।

आपश्री की पूज्या दादीजी के दिन में उस शिविर की जगह जाती तब आपश्री को भी साथ लेकर जाती। कृषकाय गायों को देखकर आप उनके पास में जाकर जोर-जोर से रोने लगते। आपश्री के अत्यधिक व्यथित हो जाने पर पूज्या दादाजी वापिस आपश्री को घर ले जाती थी। दूसरे दिन पुनः उन गोमाताओं को देखने की आप जिद करते, वहाँ नहीं ले जाते तो भोजन नहीं करते। तब आपकी दादीजी पुनः आपश्री को वहाँ पर लेकर आती फिर वही व्यथा जोर-जोर से रोना शुरू कर देते। यह घटनाक्रम लम्बा चला। इस व्यथा से उस समय आपका शरीर भी उन वृद्ध गोमाताओं के जैसा कृष हो गया था।

विक्रम सवंत 2027 में सुवृष्टी हुई, फसलें बहुत अच्छी थी। गोवंश सुखी हो गया। उस वर्ष चूहे बहुत पैदा हुए थे। दीपावली के पश्चात आपको बड़ी भुआजी अपने साथ उनके गांव ले गए। वहाँ पर रात के समय चूहों द्वारा आपके पाँवो की अंगुलियाँ के काट दिया जिसका भुआजी ने आयुर्वेदिक उपचार कराया और एक माह बाद भुआजी के पुत्र शिवराम जी के साथ आपश्री पुनः जन्मभूमि वासन चौहान गाँव आ गए।

आपश्री को पिताजी ने सवंत् 2029 चैत्र शुक्ल पक्ष में विद्यालय प्रवेश कराया, उससे पूर्व गायत्री मंत्र व हनुमान चालीसा पिताजी से सुनकर याद कर लिया था। बचपन से ही आपकी स्मरण शक्ति अत्यंत तीव्र थी। इसलिए जो सुनते अथवा पढ़ते वह सब याद हो जाता था। विद्यालय आते-जाते पढ़ा-सुना रटते रहते थे। कुशाग्र बुद्धि के कारण आपके शिक्षक श्री मांगीलालजी, श्री भवानीसिंहजी, व श्री वरदारामजी ने दो वर्ष में चौथी कक्षा पास का प्रमाण पत्र आपश्री को दे दिया। सभी शिक्षकगण आपश्री से अत्यधिक स्नेह करते थे, परंतु विद्यालयी शिक्षा में आपश्री की रूचि नहीं बनी। इसलिए बीच में ही विद्यालय जाना छोड़ दिया और गाँव के ग्वालों के साथ गोचारण करने जाने लगे।

आपश्री के पिताजी ने गीता पाठ करना सिखाया। दिन रात गोचारण और हनुमान चालीसा व गीताजी का पाठ गायन करना जीवन की दिनचर्या बन गया। एक दिन गोधूली वेला में गाँव के गोपिका तालाब पर श्री गोपाल कृष्ण मिले, उनसे मन की मित्रता हो गई वे मन को....शेष अगले अंक में

श्रीमद् भागवत कथा

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

पिछले अंक से आगे.....

इस बार कुंभ में 10 जनवरी से ही मानस जी की क्रमिक कथा के क्रम में अरण्यकांड का शुभारंभ होगा और अयोध्या के कई महापुरुषों ने संतों ने और चित्रकूट के, वृंदावन के कई महापुरुषों ने यह आग्रह किया है कि जैसा एक-एक चौपाई से आप बोल रहे हैं ऐसे ही क्रमशः पूरी मानस जी पर प्रवचन करें तो वह भी होगा, विनय पत्रिका पर तो प्रवचन हुआ ही है जो कोरोना के काल में शुरू हुआ था। तो कम से कम विनय पत्रिका और रामचरितमानस पर दो-पांच प्रवचन हो फिर भगवान कोई योग बनावे तो गोस्वामी जी की सभी ग्रंथावलियों पर प्रवचन हो। कवितावली, दोहावली, रामललानहछू गीतावली पार्वती-मंगल जानकी-मंगल, वेराग्यसंदीपनी, बरवै रामायण पर भी होगा।

विनय पत्रिका पर तो प्रवचन हुआ ही कोरोना के समय तो अभी मूल हम लोग कर रहे हैं तो मूल पाठ में रामचरितमानस का मूल पाठ पूरा हो चुका है और ग्रंथावली में रामाज्ञा प्रश्न जानकी मंगल पार्वती मंगल बर्वे रामायण वैराग्य संदीप ने रामललानहछू और दोहावली हो चुके हैं, इस समय कवितावली का क्रम चल रहा है। कवितावली में सुंदरकांड चल रहा है, तो आज केवल दो-तीन चंद पढ़ देते हैं और फिर कल थोड़ा समय देंगे। श्री हनुमान जी ने आग लगा दी लंका में और लंका जल रही है और उसे समय वहाँ की क्या स्थिति है उसका बड़ा अद्भुत साहित्यिक वर्णन श्री तुलसीदास जी महाराज कर रहे हैं इस कवितावली के सुन्दकांड में। संभवत पूरे हिंदी साहित्य में जैसा लंका दहन लीला का वर्णन कवितावली में गोस्वामी तुलसीदास जी ने किया है ऐसा साहित्यिक वर्णन पूरे हिंदी साहित्य में लंका दहन लीला का दूसरा कहीं भी उपलब्ध नहीं है।

हम लोग अब श्रीमद् भागवत कथा के क्रम में शुभारंभ से अब तक भगवान की कुमार लीला तक आए थे और आज भगवान बालकृष्ण प्रभु की पौगण्ड लीला में हम लोग प्रवेश कर रहे हैं। सर्वप्रथम माता यशोदा को मुख में ब्रह्मांड का दर्शन कराना है और इसके बाद बालकृष्ण प्रभु की रिंगण लीला आरंभ होती है। रिंगण लीला का अर्थ है ठाकुरजी का घुटनों पर चलना, खिसक-खिसक कर चलना। इसके बाद श्री ठाकुर जी बालकृष्ण प्रभु की 5 वर्ष की आयु तक की जो अवस्था है उसे कुमार अवस्था कहा गया उसकी लीला आरम्भ होती है। 2 वर्ष की आयु तक शैशव और फिर 2 वर्ष से 5 वर्ष के बीच की जो अवधि है वह कौमार और छठे वर्ष की आयु है वो पौगण्ड है, 14 से 16 वर्ष की आयु किशोर अवस्था और 16 वर्ष की आयु के बाद से युवावस्था का शुभारंभ होता है।

तो ठाकुरजी अवतार लेकर जब-जब भी लीला करते हैं तब वात्सल्य भाव के उपासकों को वात्सल्य सुख प्रदान करने के लिए भगवान श्री शिशु लीला करते हैं, बाल लीला करते हैं, पौगण्ड लीला करते हैं और कुमार लीला करते हैं एवं फिर मधुर रस के उपासकों को प्रसन्न करने के लिए आल्हादित करने के लिए किशोर लीला करते हैं और किशोर लीला के बाद फिर ठाकुर जी की आयु बढ़ती नहीं है, भगवान सदा 16 वर्ष के किशोर ही रहते हैं। इसलिए बिल्वमंगल जी ने कृष्णकर्णामृत ग्रंथ में बड़ा सुंदर स्मरण किया है। बहुत प्यारा श्लोक है-

अस्ति स्वस्तरुणी-कराग्र-विगलत्-कल्पप्रसूनाप्लुतं
वस्तु प्रस्तुत-वेणुनाद-लहरी-निर्वाण-निर्व्याकुलम् ।
स्रस्त-स्रस्त-निरुद्ध-नीविविलसद्-गोपीसहस्रावृतं
हस्तन्यस्त-नतापवर्ग-मखिलोदारं किशोराकृति ।।

जो वेणुनाद-लहरी के माधुर्य-आनन्द से निर्व्याकुलया

निश्चल हैं; स्वर्गीय (स्वर्ग की) तरुणियों के कराग्रभाग से निकले कल्पतरूओं के पुष्पों द्वारा छा गए हैं; स्खलित नीवियों वाली सहस्र-सहस्र गोपियों से घिरे हैं; जिनके हाथ में प्रणतजनों का अपवर्ग (मोक्ष, परमगति) विद्यमान है; जो सभी के प्रति उदार हैं- ऐसी एक किशोराकृति वस्तु श्रीवृन्दावन में नित्य विराजमान है।

सबसे पहले है 'वस्तु अस्ति' अर्थात् वस्तु विद्यमान है। वस्तु शब्द नपुंसक लिंग है। नपुंसक लिंग का इसलिए प्रयोग किया कि ब्रह्म शब्द भी नपुंसक लिंग है। क्योंकि ब्रह्म न स्त्री है और न पुरुष है। इसलिए ब्रह्म शब्द का लिंग निर्धारण भी नपुंसक ही है और यह वस्तु कोई सामान्य वस्तु नहीं है यह परमार्थ, परतत्व, परब्रह्म है। इसलिए बिल्वमंगलजी ने वस्तु शब्द का उपयोग किया। 'वस्तु अस्ति' का अर्थ है कि उस विलक्षण वस्तु की विद्यमानता का कभी अभाव नहीं है, वह नित्य वस्तु है, शाश्वत वस्तु है, उस वस्तु के संबंध में यह नहीं कहा जा सकता कि पहले थी अथवा अभी नहीं है, यह पहले नहीं थी अथवा अभी तो है, लेकिन आगे रहेगी कि नहीं रहेगी यह नहीं कहा जा सकता। ऐसा नहीं है, पहले भी थी आज भी है आगे भी रहने वाली है। अर्थात उस वस्तु की विद्यमानता कभी कम होने वाली नहीं है। वह वस्तु सदा वर्तमान रहने वाली है।

तब प्रश्न उठा कि ऐसी कैसी विलक्षण वस्तु है? क्योंकि ब्रह्माण्ड की कोई वस्तु ऐसी है ही नहीं जो सदा विद्यमान रहने वाली हो? आप कहते हो 'वस्तु अस्ति' वस्तु है और वह ऐसी विलक्षण वस्तु है जो सदा विद्यमान रहने वाली है। वह कैसी वस्तु है? अरे बोले पूछो मत, इतनी विलक्षण वस्तु है कि देवांगनाएं भी उस पर इतनी आसक्त हो गई है, मोहित हो गई है, **स्वस्तरूणी-कराग्र-विगलत्-कल्पप्रसूनाप्लुतं** - स्वर्ग की रमणियों के कर के अग्रभाग से झरते हुई कल्पवृक्ष के पुष्पों से ढ़की हुई सी वस्तु है, ढ़की सी जा रही है, इतने फूल बरसाए जा रहे हैं कि श्री ठाकुर जी ढ़क जाते हैं। आपने कभी फूलों की होली देखी है? क्या होता है इसमें? तरह-तरह के रंग-बिरंगे पुष्पों की पंखुड़ियाँ इकट्ठी की जाती है और फिर उसे राधा-कृष्ण के ऊपर प्रिया-प्रीतम के ऊपर बरसाई जाती है जिससे थोड़ी ही देर में एक डेढ़ मिनट में ही राधा रानी और ठाकुर जी यहाँ गले तक ढ़क जाते हैं और फिर लाल गुलाल के बादल उड़ाये जाते हैं। अभी हम लोग थे ना वहाँ मुखराई में भी आखिरी दिन फूलों की होली खेली गई। वहाँ तो केवल 10-5 गोपियों फूल बरसा रही है तब श्री ठाकुर जी ढके हुए से प्रतीत होते हैं, पर यहाँ तो असंख्य-असंख्य देव रमणियों कल्पवृक्ष के पुष्पों की वर्षा कर रही है और वस्तु वह एक है अद्वितीय है- 'एकमेव द्वितीयं' है तो उसका आपूर्त हो जाना, ढ़क जाना स्वाभाविक है। लेकिन एक बड़ी विलक्षणता है। बहुत ध्यान से सुने और देखें वह पुष्प की वर्षा जो ऊपर से हो रही है और वह विलक्षण वस्तु ढ़क नहीं रही है। वह निरंतर ऊपर उठती चली जाती है। तो वह कल्पवृक्ष के पुष्पों का पर्वत जैसा बनता चला जा रहा है और पर्वत के शिखर पर वे ऊपर बढ़ते चले जा रहे हैं, पर इतने पुष्प झड़ रहे हैं कि बार-बार लगता है कि अब ढ़क गए और फिर ऊपर प्रकट हो जाते हैं, फिर ऊपर प्रकट हो जाते हैं।

ऐसी विलक्षण चमक प्रतियुक्त वह विलक्षण वस्तु बोले जड़ है कि चेतन? बोले विलक्षण वस्तु है। 'प्रस्तुत वेणुनाद लहरी'- वेणनाद की स्वर लहरियाँ वह वस्तु प्रस्तुत कर रही है और आश्चर्य है, स्वयं अव्याकुल है पर अपने मधुराती मधुर वेणुनाद से पूरे ब्रह्माण्ड को व्याकुल बना दिया। सब अव्याकुल हो गये। असंख्य गाएं जो उच्चतम गिरिराज के शिखर पर चर रही थी उनके कर्ण में जब मधुर वेणुनाद का स्वर पड़ जाता है तो हुंकार करके वे आ रही है जिससे उनके खुरों की रज के बादल बन जाते हैं और वे आते हुए ऐसी लग रही है कि पांडव वर्ण के

बादलों में होकर के वे गाएं आ रही हैं और असंख्य-असंख्य गायों से आवृत्त वो वस्तु है। वे सब कान खड़े करके उनके मुख के अग्रभाग पर हरी घास के तृण लगे हुए हैं, चित्र लिखित सी खड़ी-खड़ी देखती रह जाती है ऐसा लगता है कि वे अपने नेत्रों के चसकों में भरभर उस रूप सुधा का और अपने कर्णो को उठा-उठा कर वेणु माधुरी का पान कर रही है अथवा ऐसा लगता है कि वे अपने नेत्र मार्ग से अपने प्रियतम को अपने हृदय में बिठाकर स्वयं गोपी रूप में प्रकट होकर भीतर से अपने प्रियतम श्रीकृष्ण का आलिंगन कर रही है।

अद्‌भुत वस्तु है। 'अस्ति स्वस्तरूणी-कराग्र -विगलत्-कल्पप्रसूनाप्लुतं' सबको निर्विषय आनन्द दे रही है। सब व्याकुल है और स्वयं अव्याकुल है। यह तो गायों की दशा है। गोपियों की दशा कैसी होगी? गोपियों चारों ओर से दौड़ी आ रही है। उस विलक्षण वस्तु को जो प्रस्तुत लहरी है जो कल्पवृक्ष प्रसून से आप्त है, उस वस्तु को गोपियों ने चारों ओर से घेर रखा है। आकाश में देवांगनाओं ने घेर रखा है और नीचे गोओं और गोपियों ने घेर रखा है। अब कल्पवृक्ष के पुष्पगिरी पर वह वस्तु खड़ी है। अनवरत पुष्पवर्षा हो रही है, गोपियाँ चारों ओर से खड़ी है और बड़ी विलक्षण बात है कि वह वस्तु किसी भी दिशा में मुँह करके खड़ी हो तो भी आकाश की देवांगनाओं की तरफ भी मुख है, गोपियों की तरफ भी मुख है, गोओं की तरफ भी मुख है। समस्त दिशाओं की ओर इनका मुखारविंद है। जहाँ से जो देख रहा है, वहीं से मुख कमल का, मुख चंद्र का दर्शन हो रहा है। अब गोपियों को भी यही अनुभव हो रहा है। गोपियों को भी जहाँ भी खड़ी है वहाँ से प्रियतम के मुख चंद्र का दर्शन कर रही हैं। ग्वालबाल भी चारों ओर से जय जयकार कर रहे हैं, उनको भी यही लग रहा है कि श्रीकृष्ण का मुखारविंद हमारे सम्मुख है। वह कोई सामान्य वस्तु नहीं है। सर्वतः पाणी पादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्। सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति।। वह सब ओर हाथ-पैर वाला, सब ओर नेत्र, सिर और मुख वाला तथा सब ओर कान वाला है, क्योंकि वह संसार में सबको व्याप्त करके स्थित है। आकाश जिस प्रकार वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी का कारण रूप होने से उनको व्याप्त करके स्थित है, वैसे ही परमात्मा भी सबका कारण रूप होने से सम्पूर्ण चराचर जगत को व्याप्त करके स्थित है।

अब कल्पना करें। ऊपर तो घेरा है स्वरमणियों का, नीचे घेरा है गोपियों का, दूसरा घेरा है ग्वाल बालों, का तीसरा घेरा है गायों का, चौथा घेरा है हिरणियों का और वे त्रिभंग ललित वस्तु बंसी बजा रहे हैं व पुष्पगिरी पर खड़े हुए हैं। असंख्य गोपियों से आवृत वह वस्तु है और उन गोपियों की क्या दशा हो रही है। उस रूप पर, उस स्वर पर, उस अदा पर इतनी अधिक न्योछावर हो गई है कि उसके अंग प्रत्यंग ढीले पड़ गए हैं तो उनके जो कटि सूत्र है वे भी ढ़ीले पड़ गये हैं जो वे बार-बार पकड़कर रखती है कि गिर न जाय।

बड़ी उदार है वह वस्तु। कितनी उदार है? गई मारन पूतना, विष कालकूट लगाय के। मातु की गति दई ताहि कृपाल जादवराइ के।। वे इतने उदार हैं कि जो विष लगाकर भगवान को मारने गई उस पूतना को मां की गति प्रदान की और अपने धाम भेज दिया जिसे पाने के लिये योगी सैंकड़ों वर्षो तक तपस्या करते हैं। विनय पत्रिका में गोस्वामी जी कह रहे कि मारने का संकल्प लेकर आने वाली को जो माता की गति दे सकते हैं, वे प्रेम करने वाले को क्या नहीं दे सकते? वे इतने उदार हैं कि कोई एक बार उनके चरणों में प्रणाम कर ले तो उसे लंका का राजा बना देते हैं। श्रवण सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर। त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर।। एक बार किसी ने उनके चरणों में प्रणाम कर लिया तो सोचते हैं कि इसे क्या दें.....शेष अगले अंक में

भक्त चरित्र

गोसेवा से एक भक्त के जीवन में हुआ चमत्कार

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

एक सज्जन व्यक्ति बड़े भोले भाले प्रकृति के व्यक्ति उन्होंने कहानी कथा में सुन लिया कि गाय की सेवा से भगवत प्राप्ति होती है। हमारे खाकचौक वाले महाराज जी के पास आते थे पेंट पहने हुए। ब्राह्मण थे और भाषा से हमको लगता था कि शायद इधर इटावा क्षेत्र या बदायूं क्षेत्र का उनका जन्म रहा होगा। वे बातें ऐसी करते कि दूसरा आदमी यही समझे कि पागल है, पर खाकचौक वाले महाराज जी वैसे तो उनसे कोई बातचीत करना ही कठिन था उनसे ज्यादा मुँह लग करके पर वह भक्त घंटों बातें करता और महाराज जी सावधान होकर हर बात उसकी सुनते थे। हंसते भी खूब। एक बार हमने कहा कि महाराज जी यह क्या बातें करता है भोला-भाला दिखता है। तो महाराज जी ने कहा ऐसे भोले लोगों को भगवान की लीलाओं के दर्शन होते हैं, लोग विश्वास नहीं करते पर यह पागल नहीं है। यह सिद्ध कोटि का भक्त है।

एक बार हम वहीं बैठे थे। महाराज जी को उसने एक अपना अनुभव सुनाया। महाराज जी ने कहा- कहो भक्त, बहुत दिनों से आये, आज कोई बढ़िया बात सुनाओ। महाराज जी उसको आते ही कहते थे कि कोई बढ़िया बात सुनाओ। वह इतना विचित्र आदमी था कि एक बार तो महाराज जी के तखत पर आकर बैठ गया। बड़े-बड़े महंत, श्री महंत जगतगुरु भी उनके बगल में नहीं बैठ सकते, इतने कड़क थे महाराज जी। किसी ने कहा उतर जाओ नीचे, तो हंसकर बोले हममें तुममें भेद ही क्या है, हम तुम तो एक ही है। महाराज जी बोले- बिल्कुल ठीक कहा तुमने, हमारे में तुम्हारे में बाल के बराबर भी भेद नहीं है। आराम से बैठो यहाँ पास। फिर बोला साधु लोग ऐतराज कर रहे हैं तो यहाँ नीचे बैठ जाता हूँ। महाराज जी ने कहा जैसी भगवान आपकी इच्छा। वह नीचे चटाई पर बैठ गया।

तो उसने एक बात बताई कि हमने महाराज जी संतों से सुना कि गोसेवा करने से भगवत प्राप्ति होती है। तो महाराज जी हम इस तलाश में निकले कि कहीं हमको गोसेवा करने को मिले। तो हम घूमते-घूमते कृष्ण जन्मभूमि पहुँचे। वहाँ कृष्ण जन्मभूमि मंदिर की दो गाएं थी- एक श्यामा और एक गौरी, दोनों देसी गाएं। वहाँ के व्यवस्थापक से हम मिले कि हम गोसेवा करना चाहते हैं। व्यवस्थापक बोले आपको गोसेवा करना आती है क्या? बोले हमने बचपन में गोसेवा की है, हम कर लेंगे। बोले क्या लोगे सेवा के बदले? हमने कहा कुछ नहीं लेंगे। ना तो वेतन लेंगे, ना भोजन लेंगे, ना वस्त्र लेंगे। ठाकुरजी की लीला ही रही होगी कि उस समय उनके वहाँ गोसेवक का अभाव था। जो ग्वाला था वो छोड़कर चला गया था। उनको गोसेवक की सख्त आवश्यकता थी। ट्रस्ट वालों ने कहा भैया यह तो बड़ा अच्छा आदमी मिला। भोजन भी नहीं, कपड़ा भी नहीं और तनख्वाह भी नहीं। ऐसा सेवक किसी को मिल जाय तो फिर कहना ही क्या? अच्छा कोई बात नहीं भोजन तो कर लिया करना। ठाकुर जी को भोग लगने के बाद आपको मिल जाएगा। हमने कहा वो आपकी इच्छा है।

महाराज जी मैं गोसेवा करने लग गया रात और दिन एवं इस भाव से सेवा करता कि ये भगवान हैं। गोसेवा करते-करते जब थकता तो गायों के बीच में ही सो जाता। एक साल हो गया हमको गोसेवा करते-करते लेकिन अनुभव कुछ नहीं हुआ। साल भर हम कहीं नहीं गए। एक दिन हमने मन में विचार

किया कि महात्मा कह रहे थे कि गोसेवा से भगवत प्राप्ति होती है, पर हमको तो प्राप्ति हुई नहीं, अरे प्राप्ति तो नहीं, पर कुछ तो अनुभव होता? ऐसा विचार हम कर ही रहे थे थोड़ी दूर बैठकर कि हमारी दृष्टि सामने खड़ी गौरी गाय की ओर पड़ी तो देखा कि उसके पेट के मध्य में एक विलक्षण तेज प्रकाश पुंज प्रकट हुआ और उस प्रकाश पुंज के मध्य में बाल कृष्ण लाल-लाल पेट में खेल रहे हैं इधर से उधर। जैसे कांच में आरपार दिखता है ऐसे हमको साफ-साफ दिख रहे हैं। ऐसे गौरी गाय के पेट में बालकृष्ण खेलते हुए दिखाई दिये। बहुत देर तक दर्शन हुए तो हमारे अश्रुधार बहने लगी और कुछ होश ही नहीं रहा। जड़वत बैठे रह गए। एक दिव्य प्रकाश और गाय के पेट में ठाकुर जी खेल रहे हैं बस यही दिखाई दे रहा है।

तब हमारे मन में भाव आया कि गौरी गाय एक विशेष भक्त होगी भगवान की इसलिए भगवान उसके पेट में खेल रहे हैं, पर श्यामा इतनी भक्त नहीं होगी इसलिये उसके पेट में नहीं खेल रहे हैं। तो यह सोचकर हमने गौरी से दृष्टि हटाकर श्यामा की ओर डाली तो और विचित्र दृश्य दिखाई दे रहा है। श्यामा बैठी जुगाली कर रही है ऐसे नाक ऊपर करके और जब श्वास छोड़ती है तो उसकी श्वास से नीलवर्ण का प्रकाश पुंज प्रकट होता है और उसमें गोपाल जी प्रकट हो जाते हैं और जब श्वास भीतर खींचती है तो गोपाल जी भीतर पेट में चले जाते हैं। फिर श्वास के साथ बाहर फिर श्वास के साथ भीतर। यह देखकर हम हंसने लगे तो लोग बोले ग्वारिया तो पागल हो गया। फिर बहुत दिनों तक हमारी वैसी ही अवस्था रही। महाराज हम आपके चरण छूकर कहते हैं, वह गदगद होकर बोल रहा था कि हमने 1 वर्ष के अंतराल में श्यामा और गौरी गायों की श्रद्धा पूर्वक सेवा से भगवान के साक्षात दर्शन प्राप्त किये।

बोलिये भक्त और भगवान की जय!

गीत

(गोसेवक श्री धनराज जी चौधरी)

(तर्ज-जय धरती माँ, जय गोमाता गूज रहा है मंत्र महान)

जय पथमेडा, जय नंदगांव
जय गोलासन नंदी धाम
लोकप्रसिद्व इस गोधाम को, शत-शत है मेरा प्रणाम।
इत गोमाता, उत गोमाता, जहाँ देखो वहाँ गोमाता।
कुछ बैठी कुछ जीम रही, कुछ प्यास बुझाती गोमाता।।
लगता है गोलोक में आये, ये है पथमेड़ा गोधाम।
लोक प्रसिद्व इस गोधाम को, शत-शत है मेरा प्रणाम।।

ग्वाल बाल सब गोसेवा में, लगे हैं दिन और रात।
धनंवतरी में गो सेवा देखो, लगे यह अपूरव बात।।
गाय सुखी हो इस दुनिया में, यही गोऋषि मनोकाम
लोक प्रसिद्व इस गोधाम को, शत-शत है मेरा प्रणाम।।

सबसे बड़ी यह नंदीशाला, गोलासन है कहलावे।
धर्म स्वरूप नंदी बाबा के, दर्शन करने सब आवे।।
गो रक्षक हनुमान बिराजे, दरबार लगा श्री राम ।
लोक प्रसिद्व इस गोधाम को, शत-शत है मेरा प्रणाम।।

वन उपवन और पुष्पवाटिका, नंदगांव की छटा निखारे।
पंचगव्य और आयुर्वेद ये सब रोगों से हमें उबारे।।
नाम मनोरमा गोलोक ये, है नव बृज मंडल धाम।
लोक प्रसिद्व इस गोधाम को, शत-शत है मेरा प्रणाम।।

ऋषि परम्परा का रूप यहाँ है, संत आश्रम का स्वरूप यहाँ है।
गो कृपा का भंडार यहाँ है, गो सेवा का भाव यहाँ है।।
संतो का सानिध्य मिले यहाँ, तीरथ मिले चारों धाम।
लोक प्रसिद्व इस गोधाम को, शत-शत है मेरा प्रणाम।।

व्यसन मुक्ति का केंद्र बना है, प्रदुषण मुक्त पर्यावरण बनाता है।
गो करुणा चातुर्मास से, गो भक्ति का वातावरण बना है।।
दर्शन करलो इस गोधाम के, बनेगे बिगड़े काम ।
लोक प्रसिद्व इस गोधाम को, शत-शत है मेरा प्रणाम।।

गीता ज्ञान

पू.परमहंस स्वामी श्री प्रज्ञानानन्द जी महाराज

..... पिछले अंक से आगे

संजय बोलते हैं क्या होने वाला है। यह उपदेश केवल धृत्तराष्ट्र के लिए नहीं है। हम सबके लिए है, सभी के लिए है। गीता में भगवान का सबसे अधिक जो नाम प्रयोग हुआ वो कृष्ण ही है और अर्जुन का सबसे अधिक जो नाम आया है वो पार्थ आया है। कृष्ण नाम बहुत अनोखा है। कृष्ण अर्थात कृष्णात् इति कृष्ण, आकर्षणात् इति कृष्ण, कृषियति इति कृष्ण। जो खेती करते हैं, कृषि करते हैं वो कृष्ण हैं। कहेंगे कि यह क्या है? देखिये कृष्ण और उनके भाई बलराम जी ये दोनों ऋषि संस्कृति, कृषि संस्कृति के द्योतक हैं। भगवान बलरामजी के एक हाथ में हल है और दूसरे हाथ में मूसल है। हम पुरी वाले हैं। हमारे प्यारे जगन्नाथ जी और बलभद्र जी, बलभद्र जी के हाथ नहीं है फिर भी उनके हाथ में मूसल है। भगवान कृष्ण गोपालक और बलरामजी भी गोपालक।

देखिये खेती के लिये गाय, बैल और खेती के लिये हल, मूसल ये आवश्यक है। यह हमारी संस्कृति है। व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिये, शरीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, आध्यात्मिक स्वास्थ्य बौद्धिक विकास और आत्मिक उत्थान के लिये पंचगव्य और शुद्ध सात्विक अन्न का होना जरूरी है। यह शरीर कृषि क्षेत्र है। हमारे पूज्य गुरुदेव बोलते थे कि शरीर कृषि क्षेत्र है इसे जोतो और आध्यात्मिक फसल उपजाओ।

कृष्ण का द्वितीय अर्थ है- आकर्षणात् इति कृष्ण। जो सबको आकर्षित करे वो कृष्ण। चुम्बक की तरह सबको अपनी ओर खींचे वो कृष्ण। प्राण कृष्ण शरीर के भीतर बैठे श्वास को आकर्षित-विकर्षित करते हैं। प्राण कृष्ण का स्मरण करो, वे आलिंगन करते हैं। यह हमारे गुरुदेव के वचन है कि शरीर में जहाँ-जहाँ स्पर्श करें और जो अनुभव होता है वह भगवान की शक्ति है। बिना भगवान की शक्ति के कोई अनुभव नहीं हो सकता, कोई गति नहीं हो सकती। वे हमारे गति है, वे हमारे पति है, वे हमारे मुक्ति है, वे हमारे शक्ति है। वे हमको ऐसे आलिंगन करके पकड़े हैं।

देखो हम सब माँ की संतान हैं। गो माँ है, गीता माँ है, गंगा माँ है, दुर्गा माँ है, गायत्री माँ है, सरस्वती माँ है। देखो छोटा सा लड़का है, माँ से मांगता है। दुर्गा के 10 हाथ है। हमारे गुरुदेव कहते थे कि जब माँ के 10 हाथ है तो हम 10 हाथ का दिया हुआ 2 हाथ में रख सकेंगे? इसलिये माँ से कुछ मांगो मत, माँ को कहो हमें अपनी गोद में बिठा लें। जब माँ की गोद में बैठ जायेंगे तो सब कुछ पा लेंगे।

'यत्र योगेश्वर कृष्ण' तो भगवान कृष्ण माता रूपीणी है, हम सबको आलिंगन करके रखे हैं इसलिये हम सब जिन्दा हैं, यह बात हम भूल जाते हैं। बंगला में एक भजन है जिसका अर्थ है मैं माँ को भूल जाता हूँ मगर माँ मुझे नहीं भूलती है क्योंकि मैं माँ का हूँ और माँ मेरी है। भगवान श्रीकृष्ण कौन है? योगेश्वर। हमारे भारतीय संस्कृति में दो शब्द है। योगेश्वर और योगीश्वर। तो भगवान श्रीकृष्ण योगेश्वर है और शिवजी योगीश्वर है। योगेश्वर मतलब योग के ईश्वर और योगीश्वर मतलब योगियों के ईश्वर।

'यत्र पार्थ धनुर्धर' धनु का मतलब उद्यम करना। हमारे गुरु लोग बोलते हैं कि उद्यम करो, प्रयत्न करो सफलता पाओगे, स्वप्न विलासी नहीं। सपने देखना गलत नहीं है, पर सपनों को साकार करने के लिये प्रयत्न करो, परिश्रमी बनो, मेहनत करो और उद्यमी बनो। करिष्य वचनम् त्व, उद्यमी भव। आपके वचनों का पालन करूंगा, धनुष उठाऊँगा, उद्यम करूँगा, युद्ध करूँगा।

दूसरा धनु है हमारा मेरूदण्ड। हमारा मेरू सीधा नहीं है, थोड़ा धनुषाकार मुड़ा हुआ है। धनुष को हाथ में उठा लो मतलब कि हमारी इंद्रियों, मन, बुद्धि आदि को अपने नियंत्रण में कर लो।

तीसरा धनुर्धर का अर्थ हमारे आँखों की दोनों भोहों को मिला देने से धनुष जैसी आकृति बनती है। इसके मध्य तीर ऊपर उठा लो। जिसकी दृष्टि नीचे नहीं है, जिसकी दृष्टि ऊपर है और श्री कृष्ण के पास है वो धनुर्धर है।

चौथा अर्थ धनु का प्रणव। उस ओमकार का आश्रय करके ऊपर उठो। यत्र पार्थो धनुर्धर इसमें पार्थ कौन है? पार्थ वही है जो माँ का बेटा हो। पार्थ के कई अर्थ है- जो मिट्टी को माँ मानने वाले, जो भारत को माँ मानने वाले। जो भारत भूमि को अपनी माँ मानता हो वो पार्थ कहलाता है। हम सब पार्थ हैं। पार्थ का एक अर्थ यह है कि जिसका यश चारों और फैल गया हो। जिसकी यश-कीर्ति लोकमुख से सुनी जाय वह पार्थ है।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

जहाँ योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण हैं और जहाँ गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन है, वहाँ ही श्री, विजय, विभूति और अचल नीति है- ऐसा मेरा मत है। जहाँ अर्जुन का संरक्षण करने वाले, उनको सम्मति देने वाले, सम्पूर्ण योगों के महान ईश्वर, महान बलशाली, महान ऐश्वर्यवान, महान विद्यावान, महान चतुर भगवान श्री कृष्ण हैं और जहाँ भगवान की आज्ञा का पालन करने वाले भगवान के प्रिय सखा तथा भक्त गाण्डीव धनुर्धारी अर्जुन है, उसी पक्ष में श्री, विजय, विभूति और अचल नीति है।

भगवत गीता भगवत गीता की वाणी माँ है। भगवत गीता का पाठ करने वाले, श्रद्धा रखने वाले सब मातृ उपासक उपासिका हैं। माता-पिता के रूप से माँ, शास्त्रों के रूप से माँ, नदी के रूप से माँ, प्रकृति के रूप से माँ, गोमाता के रूप से माँ, मंत्र के रूप से माँ शक्ति के रूप से माँ हम सबके सामने हैं हम माँ का स्वागत करेंगे। कैसे स्वागत करेंगे, सिर्फ प्रवचन में नहीं। हमारे जीवन को हम यदि धीरे-धीरे परिवर्तन के रास्ते पर चलाएंगे, आगे बढ़ाएंगे तो वही मातृ आराधना है। जो भगवान को स्मरण करते हैं, भगवान को प्यार करते हैं, गुरुओं का अनुसरण करते हैं, वही मातृ आराधना है।

अब हम ध्यानपूर्वक भगवान कृष्ण को प्रार्थना करेंगे। हे भगवान! हे प्रियतम! मैं आपका हूँ, आप मेरे हैं। हमें सत्य की साधना के रास्ते पर आगे बढ़ाएं। हम बच्चे की भांति आपका अनुसरण करेंगे। मैं बच्चा हूँ, बालक बालिका हूँ, मेरे हाथ पकड़ लीजिए। बच्चा कभी-कभी हाथ को माँ के हाथ से छुड़ा लेता है। आप मेरे हाथ को जोर से पकड़ लीजिए ताकि मैं हाथ को छुड़ा न सकूं। गलत राह पर ना जा सकूं। हे भगवान! हे मेरे प्रियतम! मेरे हृदय में भक्ति दीजिए! मन में शक्ति दीजिए! जीवन को मुक्ति के रास्ते आगे ले जाइए! मेरे जीवन में शांति हो! परिवार में शांति समृद्धि हो! राष्ट्र में विकास हो! समग्र सृष्टि में शांति हो! सभी प्राणियों के अंदर शांति और आपस में सद्भावना हो! हम आपके चरणों में यही प्रार्थना करते हैं।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्।

सभी सुखी होवें, सभी रोगमुक्त रहें, सभी का जीवन मंगलमय बनें और कोई भी दुःख का भागी न बने। हे भगवन! हमें ऐसा वरदान दो!

ॐपूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।

वह (परब्रह्मपरमेश्वर) अनंत है, और यह (ब्रह्मांडसृष्टि) भी अनंत है। अनंत से अनंत की ही उत्पत्ति होती है, और जब अनंत से अनंत को लेते हैं, तब भी अनंत ही शेष रहता है। शांति ! शांति ! शांति !

श्री राम कथा

पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज

पिछले अंक से आगे........

रामचरित मानस में लिखा है– काल धर्म नहिं व्यापहि ताही, रघुपति चरन प्रीति अति जाही। नट कृत बिकट कपट खगराया। जिसका श्री रघुनाथ जी के चरणों में अत्यधिक प्रेम है उसको कालधर्म नहीं व्यापते। उनके जीवन एक ही युग रहता है। हे पक्षीराज! नट के द्वारा किया गया कपट चरित्र देखने वालों के लिये बड़ा भयानक होता है, पर नट के सेवक जम्भूरे को उसकी माया नहीं व्यापती। रामजी के चरणों में जिनकी अति प्रीति है उनके लिये सदा सतयुग ही रहता है। जिनका मन श्री सीतारामजी के चरणों में लग गया उनका तो एक युग और बाकी के लिये चार युग होते ही हैं।

यहाँ दिव्य दर्शन हुआ और आशीर्वाद लेकर तुलसी पुनः अवधधाम पधारे हैं। आज अवध की अद्‌भुत शोभा है। अवध की छाप हमारे हृदय में कुछ नया हो गया है। उस नये छाप वाले अवध में तुलसी पधारे। और मधुमास (चैत्र मास) रामनवमी का पर्व मंगलवार पुनर्वसु नक्षत्र मध्याह्न वेला संवत 1631 उस पावन संवत् में बाबा तुलसी ने, श्री राम अवतार के जितने लक्षण उनके काल में विद्यमान थे रामायण अवतरण काल में भी वे ही लक्षण प्रकट हो गये उस समय अपनी लेखनी से–

वर्णानां अर्थसंघानां रसानां छंद सामपि,
मंगलानां च कर्त्तारौ वंदे वाणीविनायकौ।

अक्षरों, अर्थ समूहों, रसों, छंदों और मंगलों के करने वाले वाणी विनायक जी की मैं वंदना करता हूँ। यहाँ से अवध धाम में इसकी रचना का शुभारंभ हुआ।

एक वर्ष में बालकांड की पूरी गाथा बाबा तुलसी ने पूर्ण की और उस अधूरी पुस्तक को ही लेकर के पुनः काशी जी पधारे। काशी में वर्षो की साधना हुई और यह मानस आपका 2 वर्ष 7 महीने 26 दिन में पूर्ण हुआ। हमारे मन में बार-बार आता है किसी काल में हो गया होता, किसी काल में कभी होगा, श्रीमद रामचरितमानस जब भारत का संविधान बन जायेगी उस दिन आप राम राज्य का स्वप्न साकार कर पाएंगे। चूंकि श्री रामचरितमानस एक ऐसा ग्रन्थ है हमारे पास जिसमें राजा-रंक सब का समान आदर है, बड़े-छोटे दोनों का समान आदर है, कुलीन और अकुलीन का समान आदर है, निकृष्ट और उत्कृष्ट का समान आदर है। सबको एक भाव से देखा गया है।

इस ग्रंथ का अन्वेषण और अनुमोदन अनुशीलन और वाचन-वादन यद्यपि गम्भीर विषय है, इस बात को पूरे शब्दों में ना समेट जा सकता और न ही 9 दिनों में इस बात को पूरी की जा सकती है, पर जहाँ-तहाँ विहंगम दृष्टि से हम सब मानस का इस समय आस्वादन करेंगे।

सज्जनों इस पावन ग्रन्थ की रचना बाबा तुलसी से पूर्ण हुई। अद्‌भुत जीवन है बाबा तुलसी का। ऐसे तो मानस के विषय में कई संतों ने अपने मधुर-मधुर विचार रखे, मगर एक संत हुए उनके द्वारा कहा गया है–

पढ़ लो, समझ लो, लगा लो मनमाना अर्थ,
पंडित प्रवीण तुम्हें कौन कठिनाई है?
किंतु इस मानस अनंत महासागर में,
कौन जाने कहाँ कितनी गहराई है?

यही अनंत महासागर है जिसकी गहराई को आज तक किसी भी मीटर से या यंत्रों से मापा नहीं गया। साधक, ऋषि, मनीषी, महर्षियों ने जोर लगाया है जरूर पर इसकी गहराई और सतह तल तक किसी के पैर नहीं पहुँचे। यह मानस ग्रंथ है किन्तु मानस अनंत महासागर में कौन जाने कितनी कहाँ पर गहराई है?

कोई बाकी नहीं रहे देश और विदेश के महान कवि लेकिन उनके पदों की कोई थाह नहीं ले पाया। हम संतोष कर लेते हमने जो अर्थ किया अच्छा किया बढ़िया किया यही ठीक है पर बात यह पूरी नहीं होगी। तुलसी के गुढ़ार्थ को कोई सहज समझ जाए फिर तुलसी की लिखने की महिमा क्या रह जाएगी? शब्द शक्तियों को पिरो दिया है बाबा ने ऐसे में तुलसी पदों की गुढ़ार्थ न तोल पाईये। तो कहना होगा हम गुढ़ार्थ को ना समझे तो मेरा भला होगा क्या? कहा- भूल जाना बातों को मंगल भवन अमंगल हारी, द्रवहु सुदसरथ अजिर बिहारी, केवल यह चौपाई तो याद हो जायेगी? केवल इस एक पंक्ति को रटते जाओगे तो विमान आएंगे और साकेत में मेरा स्थान सिद्ध होगा। बोलो भक्तवत्सल भगवान की जय।

पढ़ लो समझ लो लगा लो मनमाना अर्थ,
पंडित प्रवीण तुम्हें कौन कठिनाई है?
किंतु इस मानस अनंत महासागर में,
कौन जाने कितनी कहाँ पर गहराई है?
देश विदेश के कवि कोविदों ने,
तुलसी पदों की गुढ़ता न तौल पाई है।
जन्म मरण का जो मिटता झमेला है,
जन्म मरण का जो मिटता झमेला है,
उसे खेल मत समझो
तुलसी की कविताई है।
तुलसी की कविताई है।

यह बाबा तुलसीदास जी का प्रसाद हम सबको प्राप्त हुआ है। एक अन्य संत ने कहा-

बने राम रसायन के रसिका,
रसना रसिकों के भया सफला।
अब गाहन मानस में करके,
जनमानस का मल सारा टला।
बने पावन भाव की भूमि भली,
भए भावक भावुकता का भला।
कविता करके तुलसी न लसे
कविता लसी पा तुलसी की कला।

राम रसायन का यह रस है और राम रसायन तो अपने आप में एक रस है। राम रसायन को भी कोई निचोड़ लिया हो और उसका सार तत्व जो बना वो मानस है। इस रसायन रस का सार पान करते ही, इनका अनुमोदन आदर करते ही, गाते गुनगनाते ही रसिकों का जीवन धन्य हो जाता है। इस मानस गंगा में डुबकी लगाने मात्र से ही अंतकरण का सारा मेल बह जायेगा, धुल जायेगा। अभी हमारा खेत उपजाऊ नहीं है, बीज डालो तो उगता नहीं, घास कभी-कभी पनप जाते हैं। अंत:करण इतना विकार है कि राम-कृष्ण बोलते हैं तो जीवा पर आता नहीं और विषयों के जंजाल घास के रूप में पनप जाते हैं। ऐसे अंत:करण रूपी जो बंजर भूमि है, मानस में यदि डुबकी लगाना आरम्भ कर दिया जाय जो वह उपजाऊ हो जायेगी, सिंचित हो जायेगी और अच्छे-अच्छे भाव प्रकट होने लग जायेंगे। भवुकजनों का भला और उन भावुकता का भी भला हुआ।

मानस और तुलसीदासजी पर कवि बेनी के कुछ भाव बताते हैं:-

जो पै यह रामायण तुलसी न गावतो।।
बेदमत सोधि-सोधि कै पुरान,
सबै संत और असंतन को भेद को बतावतो।
कपटी कुराही क्रूर कलि के कुचाली जीव,
कौन राम नामहु की चर्चा चलावतो।।
बेनी कबि कहै मानो-मानो यह प्रतीति यह,
पाहन हिए मैं कौन प्रेम उपजावतो।।
भारी भवसागर उतारतो कवन पार,
जो पै यह रामायण तुलसी न गावतो।।

अगर तुलसीदास जी मानस नहीं गाते तो संत कौन है, असंत कौन है यह भेद हम सबको कौन बताता? हे हरिभक्तों कलिकाल के पत्थर जैसे सूखे हृदय में प्रेम की रसधारा कौन बहाता? आज रामायण न होती, रामायण गाई न जाती, रामायण घ-घर में स्वीकार न

की जाती तो अंत:करण में रस की यह धारा नहीं फूटती। अगर तुलसी रामायण नहीं गाते तो कलि के कपटी, कु-राही, क्रर, कु-चाली जीवों के बीच रामनाम की चर्चा कौन चलाता? और अगर तुलसी यह रामायण नहीं गाते तो हमको भवसागर पार कौन उतारता?

हमारे पास साधनों की कमी नहीं है, पर उनमें प्रवेश पाना कठिन है। कई बार हमारे पास 2000 का नोट होते हुए भी एक गिलास दूध नहीं पी सकते। दूध वाले के पास खुल्ला नहीं होगा तो वो मना कर देगा। होटल पर दूध भी है, हमारे पास पैसा भी है, पर खुल्ला नहीं होने के कारण हम दूध नहीं पी सकते। अगर हमारे पास 50 रुपये का खुल्ला नोट हो तो हम गर्म-गर्म दूध की चुस्कियाँ ले सकते हैं। इसी प्रकार वेदों में हमारी गति नहीं है, पुराणों की समझ नहीं है, शास्त्रों, उपनिषदों को सामान्य बुद्धि से समझना बड़ा कठिन है, लेकिन मानस सबके लिये सहज सरल है। मंगल भवन अमंगलहारी की पंक्ति को ग्वाला गायें चराते भी गुनगुना सकता है, रसोइया भोजन बनाते भी बोल सकता है, साधु साधना के क्रम में गुनगुना सकता है, राही राह चलते गुनगुना सकता है, मजदूर सिर में पत्थर उठाये गुनगुनाता है, एक वक्ता मंच से गुनगुनाता है। एक ही मंत्र सबके हृदय में एक समान रूप से गुनगुनाता है, यही सबसे सहज मार्ग है, यही सबके तरने का राज मार्ग है। जिसका अवलम्बन करने के लिये हम सब गंगा तट पर पधारे हैं। बोलिये भक्तवत्सल भगवान की जय।

एक अर्वाचीन संत की वाणी का आश्रय लेकर हम आज के विश्राम पर आ रहा है। तत्कालीन भारत के स्वतंत्रता सेनानी के रूप में जो उन्होंने नाम भी दाखिला नहीं लिया डॉक्टर रमाकांत शास्त्री जी जो फ्रीडम फाइटर तो थे ही उनके हाथ का लिखा हुआ आज भी भारत का संविधान पांडुलिपि में रह गया, उसका आदर आज तक नहीं हो पाया है। सन 1907 में एक ग्रन्थ छपा था उनका-'सच्चा स्वराज' आपने आईडी जो देखा होगा वोटकार्ड जो अभी भारत में हम लोगों के लिए है, उसकी चर्चा 1907 में बाबा रमाकांत शास्त्री जी ने लिख दिया था जो अर्वाचीन शासक उन्होंने ऐसा सोच लिया और बनाया गया, पर उनके ग्रंथ में यह सन् 1907 में ये बातें रखी गई थी कि आई कार्ड बनना चाहिए। उनमें सच्चा स्वराज का स्वरूप दिया गया है। आज भी भारत का वह संविधान पाण्डुलिपि के रूप में पड़ा हुआ है।

जब आजाद भारत हुआ उस समय स्वतंत्रता सेनानियों के लिए कुछ राशि बांधी गई थी मासिक, उनके रहने सहने और सुरक्षा के लिए कुछ धन दिया जाए तो डॉ रमाकान्त शास्त्री जी फूट-फूट कर महात्मा जी रोए कि मां की सेवा करने वाला भी मुआवजा पाने लग गया भारत में तो भारत की कैसी उन्नति होगी? बोलो भक्तवत्सल भगवान की जय। मां के लिए बलिदान देने वालों को हम क्या उनके खून के ख्कतरे की कीमत चुका सकेंगे? क्या हम उनके बलिदान का बदला दे सकेंगे? उन महर्षियों मनिषियों के द्वारा किए गए उपकार में आज हम स्वतंत्र भारत में बैठे हैं उनके सिवाय आभार के मेरे पास कोई भी उपहार नहीं जो मैं भेंट कर सकूं। महात्मा खूब रोए।

उन्होंने सैंकड़ों बच्चों को तुलसी साहित्य पर पी.एच.डी. करवाया। कालान्तर में वे नेपाल चले गये। उन्होंने करोड़ों-करोड़ों नामजप किये। उन्होंने तुलसी पर एक ग्रन्थ लिखा जो आज भी विद्यमान है उसका एक अंश तुलसी चरित्र पर दो-चार पंक्ति के रूप में गा लेते हैं हम सब। उन्होंने क्या समझा बाबा तुलसी को और मानस को किस रूप में स्वीकार किया, उस पर चार लाईनें सुनो-

कागज के पन्ने को तुलसी, तुलसीदल जैसा बना गया।
कागज के पन्ने को तुलसी, तुलसीदल जैसा बना गया।
रसहीन गिराती सिर धुनती, ...शेष अगले अंक में

शिव महापुराण कथा

(पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज)

(वेद मंदिर अहमदाबाद)

पिछले अंक से आगे.....

मेरे-भाई बहन! आज से कई साल पहले 2007-08 की बात रही होगी, एक बार गिरिराज जी में छप्पन भोग का मनोरथ करने का मन हुआ। उस समय तक मेरा इस संस्था से कोई परिचय नहीं हुआ था और यह ज्ञान भी नहीं था कि अपने ठाकुर जी को केवल वेदलक्षणा भारतीय गोमाता का ही दूध, घृत, मिठाई भोग लग सकता है। बाकी उस समय भी गोघृत मिल सकता था।

तो हमारे परिचित एक घी के व्यापारी को पूछा तो उन्होंने कहा महाराज हम गारंटी नहीं लेंगे घी तो अच्छा ही दे रहे हैं बाकी हम गारंटी नहीं लेंगे जो आप चाहते हो वह गारंटी हम नहीं लेंगे। हमने पूछा आप कौन सा काम में लेते हैं? बोले हमारे तो गांव से आता है। आप गाँव का खाते हो और आप वाला मिलावटी पूरा गांव खाता है। बुरा न माने यह स्वार्थ तत्व है कि हमारा अच्छा हो जाना चाहिए सामने वाला भले ही खाकर मरे। उसको होना हो जो हो पर अपने को दाम मिल जाने चाहिए। शिव तत्व ऐसा नहीं है। जीव के लिए जो परम हित है वह उसे प्राप्त होना चाहिए यह शिव तत्व है।

कृपानाथ! श्रीमदभागवत में प्रसंग आता है। पृथु जी महाराज की वंश परंपरा प्रचेता हुए। उन प्रचेताओं को शंकर भगवान पहले मिले भगवान नारायण बाद में मिले और भगवान शिव ने मिलकर यह नहीं कहा कि कहाँ जा रहे हो, भगवान नारायण की भक्ति करने मत जाओ, मैं तुमको ज्यादा लाभ दूंगा, मैं तुम्हें ज्यादा वरदान दूंगा, मैं जल्दी प्रसन्न हो जाऊंगा, नहीं उनकी नारायण भक्ति की प्रशंसा की शंकर भगवान ने और कैसे भगवान नारायण जल्दी प्रसन्न होंगे यह सूत्र शंकर भगवान ने प्रचेताओं को दिया। श्रीमद्भागवत जी में वह रूद्र गीत नाम से प्रसिद्ध है। गीत का नाम रूद्र गीत है, पर गुणगान उसमें श्री भगवान के श्री नारायण के हैं। मैंने ऐसे बहुत प्रसंग देखे हैं कृपानाथ जहाँ भगवान शिव ने स्वयं को पीछे करके श्री हरि को आगे किया।

मेरे भाई-बहन जो हमेशा आपके प्रियतम को आगे करता हो क्या आपकी उसमें श्रद्धा नहीं होगी? बोलिए ना। जिस स्त्री के सास-ससुर उसके पति को आगे बढ़ाते हैं, उसके पति को प्रतिष्ठित करते हैं, उसके पति को सहयोग करते हैं, क्या उस स्त्री की अपने सास-ससुर में श्रद्धा नहीं होती है? बोलिए ना। उस स्त्री की अपने सास-ससुर में श्रद्धा होती है। हमारे भगवान शिव सदैव श्री हरि को आगे करते हैं। आप कहोगे कि आप क्या शिवजी का गुणगान गाने बैठे हो कि श्री हरि का गुणगान गाने बैठे हो? कृपानाथ गुणगान हमेशा देने वाले का ही होता है। कुछ भी होगा शिव देने वाले है। गुणगान हमेशा देने वाले का ही होगा।

केदारखंड शिव जी का ही था लेकिन भगवान नारायण का भाव बना वहाँ निवास करने का तो शिवजी चले गए दूसरे पहाड़ पर और वह केदारखंड बद्रीनाथ बना कर दे दिया श्री हरि को कि बैठो आप। बद्रीनाथ में भगवान बद्री विशाल विराजे हैं। यह शिव का समर्पण है। भैया यह शिव का समर्पण है, शिव की भूमि है। वहाँ केदार स्थित थे। आज भी बद्रीनाथ में आदि केदार मौजूद है। आदि केदार यानि जो सबसे पहले केदार यहाँ था। लेकिन भगवान नारायण ने कहा बाबा मेरे को यहाँ रहना है आप रहो चलो पार्वती जी थोड़ी नाराज हुई पर परवाह नहीं। मेरे मित्र का मन पूरा होना चाहिए और एक घटना और सुनाता हूं मैं आपको भगवान शिव

की जिस घटना को सुनकर मैं तो न्योछावर हो गया शिवजी पर। यहाँ कथा में भैया सब शिव भक्त नहीं बैठे हैं, भगवान श्री हरि के प्रेमी भी बैठे हैं, कृष्ण कन्हैया के प्रेमी भी बैठे हैं, श्री राम जी के प्रेमी भी बैठे हैं, पराअंबा भगवती के प्रेमी भी बैठे हैं सब बैठे हैं, और कुछ-कुछ मेरे जैसे भोजन प्रेमी भी बैठे हैं।

एक बार शिवजी ने एक बहुत सुन्दर लोक बनाया। पार्वती जी को आश्चर्य हुआ। बहुत सुंदर कथा है, ध्यान से सुनना, थोड़ी देर के लिए कुछ हलचल मत करना। बहुत मीठी कथा है। प्रसंग आएगा जब मैं श्लोक आदि भी सब सुना दूंगा। अभी तो पहले सुना दे थोड़ा ट्रेलर दिखाना होता है ना। भगवान शिव ने एक सुंदर लोक बनाया, बहुत सुंदर लोक बनाया। पार्वती भी सोचने लगी बरसों से हिमालय में कैलाश पर बस रहे हैं आज तक इन्होंने एक गद्दी तक नहीं बनाई और यह इतना सुंदर लोक? अचानक इनके मन में क्या आ गई? इन्होंने कैसे यह सब बनाया?

कोई आदमी बरसों से पुराने घर में रह रहा हो, लोग थक गए हो बोल-बोल के कि पैसों से क्या करोगे, साथ लेकर जाओगे क्या? मित्र भी बोलते कि पैसों से क्या करोगे, चाटोगे क्या? और जब बनाने लगते हैं तो मित्र बोलते हैं कि देखो कितना भारी बना रहा है। लोग बोलते हैं देखो पहले तो मानता ही नहीं था और अब देखो। लोग बहुत खतरनाक होते हैं। हमारे मारवाड़ी में कहावत है- चोर ने कहे चोरी करजे और घरधणी ने कहे जागतो रहीजे। तो पार्वती जी को बड़ा आश्चर्य हुआ कि कभी अपने लिए कुछ करते नहीं, आज अचानक इनको क्या सूजी कि इतना बढ़िया लोक बना रहे है।

बहुत सुंदर लोक बनाया। उस लोक का वर्णन तो अभी नहीं करूंगा मैं किंतु लोक बनाया बहुत सुंदर। उसमें चित्रकारी करवाई, पेंटिंग होती है ना बहुत सुंदर चित्रकारी करवाई। बहुत सुंदर दिव्य लोक बनाया भगवान शिव ने।पार्वती जी सोचने लगी चलो लंबे समय बाद अब नए घर में रहने को अवसर आया है। माताओं बहनों को थोड़ा नए घर का कुछ ज्यादा ही रहता है। अब पार्वतीजी बड़े चाव में कि अब हम उसमें रहेंगे, उसमें आनंद करेंगे। लेकिन एक दिन घटना घटी। क्या घटना घटी?

भगवान शिव बैकुंठ में गए। भगवान शिव को देखकर भगवान नारायण बैठ गए, शेष शैया से उठ गए और भगवान शिव ने हाथ पकड़ा और हाथ पकड़ के कहा चलो मेरे साथ चलो। कहाँ चलो? शिवजी ने कहा मेरे साथ चलो। ठाकुर जी ने कहा कहाँ ले जा रहे हो? बाबा बोले चलो चुपचाप मैं कहूं जैसे करो और ले जाकर के शिव जी ने भगवान बैकुंठनाथ को वह जो दिव्य लोक बनाया था उस दिव्य लोक का जो प्रधान सिंहासन था उस सिंहासन पर ले जाकर और भगवान को बिठा दिया और जानते हैं उसके बाद क्या किया? उसके बाद भगवान शिव ने उस दिव्य सिंहासन पर प्रभु को बिठाकर उनको साष्टांग प्रणाम किया। भगवान नारायण संकोच में आ गए। बाबा यह आप क्या कर रहे हैं, प्रभु आप यह क्या कर रहे हैं? मैं तो आपका दास हूँ। मैं तो आपका बालक हूँ। मैं तो आपका सेवक हूँ।

शिवजी कहते हैं- आप मेरे बालक ही नहीं, दास ही नहीं, आप मेरे मित्र ही नहीं, आप मेरे सब कुछ हो, मेरे सर्वस्व हो। प्रभु यह क्या है? आप मुझे प्रणाम क्यों कर रहे हैं? भगवान शिव ने कहा कि इस जगत में सब मेरी आराधना करते हैं, सब मेरी पूजा करते हैं, मेरा मंत्र जपते हैं, किन्तु मेरे मन में आया कि लोगों को बताना पड़ेगा कि आराधना कैसे होती है? लोगों को बताना पड़ेगा कि मंत्र कैसे जपते हैं? लोगों को बताना पड़ेगा की उपासना कैसे होती है? उसके लिए यह सब कुछ मुझे करके बताना पड़ेगा। तो मेरे मन में आया यह सब बताने के लिए किसी को अपना इष्ट बनाना पड़ेगा। अब मैंने देखा

कि मैं सबका इष्ट हूँ, मेरा इष्ट कौन बने? तो फिर मैंने आप ही का चयन कर लिया। आप मेरे इष्ट होंगे आज से आप जिस जगह पर बैठे हैं यह गोलोक का सिंहासन होगा। यह लोक गोलोक होगा और इस गोलोक के सिंहासन पर बैठे हुए आपकी आराधना मैं किया करूंगा।

इसलिए कृपानाथ जिसे हम गोलोक गोलोक बोलते हैं वह गोलोक भगवान शिवजी द्वारा निर्मित है। उस गोलोक में भगवान को बिठाने वाले शंकर भगवान है। यदि उस लोक में भगवान शिव खुद बैठ गए होते तो आज सबसे बड़ी प्रसिद्धि उस लोक के नाते से भगवान शिव की होती। कोई आदमी मुंबई गया होगा छोटे-मोटे काम से लेकिन कोई पूछे कि मुंबई कैसे गये तो बोलेगा माल लेने गए हैं। अमिताभ बच्चन जी से मिलेंगे वहाँ। ऐसे ही कोई कुछ भी कर्म करने वाला हो, पर लिखते हैं सब गोलोकवासी। अब किसके पास आई है फोटो वहाँ कि गोलोक में है या कहीं अन्यत्र?

सब इच्छा करते हैं गोलोक में रहने की सोचो कितना सुंदर होगा वो गोलोक? उस गोलोक को बनाने वाले भगवान शिव, लेकिन उसमें कहीं अपना नाम नहीं लिखवाया। मैं समझता हूँ आप में से बहुत सारे क्या सभी को आज ही पता चला होगा कि गोलोक को बनाने वाले भगवान भोलेनाथ, भगवान शंकर है। अपने मित्र को दो तो ऐसे दो कि किसी को पता भी न चले कि किसने दिया, नहीं तो देने से पहले तो उसका ढ़िण्ढ़ोरा पीट देते हैं कि हम देंगे, हम देंगे।

बताइए आप आज कितने वर्ष हो गए, लाखों वर्ष हो गए भाई साहब पर आज तक आप लोगों को नहीं पता चला, आप गुण गोलोक के ही गाते रहते हो रात दिन। अपने संस्थानों के नाम गोलोक धाम, गोलोक तीर्थ ऐसे हम सबने रख रखे हैं। आज तक नहीं पता गोलोक के आधिश्वर कौन है, गोलोक के वास्तव में निर्माता कौन है, भोलेनाथ। यह जब कथा मैं पढ़ी ना तब मुझे भोलेनाथ और प्यारे लगने लगे। 'वैष्णवानां शम्भु' वैष्णवों में सबसे श्रेष्ठ शंकर भगवान कहे जाते हैं, तो किसी ने सोचा कि शंकर भगवान वैष्णव में सबसे प्रमुख किस लिए कहे गए हैं?

देखो भाई ध्यान से सुनिए। कोई कैसे भी क्या बोलता है, मुझे तो आश्चर्य आता होता है कि बिना विचारे क्यों बोल देना कुछ भी। वैष्णव जो होता है वह सिर्फ तिलक से नहीं होता है। वैष्णव का आचार भी जो है ना बहुत ऊंचा होता है। आचार विचार की ऊंचाई जिसमें है उसको वैष्णव माना जाता है। कोई कह दे यह तो वैष्णव है।

हमको कभी कोई घर पर भोजन करने के लिए निमंत्रित करते हैं, कोई नए लोग जो ज्यादा नहीं जानते तो वे यह कहते हैं कि महाराज हमारे घर भोजन करने आइए। तो हम कहते नहीं जी हम अभी तो नहीं आएंगे। तो वे कहते हैं- महाराज हमारे घर वैष्णव हैं, हम वैष्णव हैं, हमारी दादीजी वैष्णव है। वे यह नहीं कहते कि हमारे घर पर पवित्रता है। वह खाली वैष्णव है इतना कहना पर्याप्त होता है। वैष्णव शब्द लगना यह पवित्रता का परिचय हो गया। वैष्णव शब्द लगा यह शुद्धता का परिचय है। वैष्णव शब्द यह प्रमाणिकता का परिचय है।

तो विचार करिए सिर्फ वैष्णव कहने पर प्रमाणिकता आ जाती है, शुद्धता आ जाती है, पवित्रता आ जाती है, उच्चता आ जाती है, दिव्यता आ जाती है, भक्ति आ जाती है, भाव आ जाता है तप आ जाता है, त्याग जाता है, प्रेम आ जाता है, समर्पण आ जाता है तो फिर जो वैष्णव में सर्वश्रेष्ठ है उसकी ऊंचाई का आप खुद विचार कर लीजिए। क्या भगवान शिव को श्रीमद्भागवत महापुराण कहती है वैष्णवानां शंभू। वैष्णवों में अग्रगणी भगवान शिव हैं। कैसे आप शिवजी को बोल देते हो कि ये तो भांग पीते है। कुछ नहीं ऐसे...शेष अगले अंक में

भज गोविंदम
(गोविंद की स्तुति-प्रार्थना)

(*श्रीमद् आदि शंकराचार्य द्वारा रचित*)

...........पिछले अंक से आगे

सुर मंदिर तरु मूल निवासः,
शय्या भूतल मजिनं वासः।
सर्व परिग्रह भोग त्यागः,
कस्य सुखं न करोति विरागः

देव मंदिर या पेड़ के नीचे निवास, पृथ्वी जैसी शय्या, अकेले ही रहने वाले, सभी संग्रहों और सुखों का त्याग करने वाले वैराग्य से किसको आनंद की प्राप्ति नहीं होगी।

योगरतो वाभोगरतोवा,
सङ्गरतो वा सङ्गवीहिनः।
यस्य ब्रह्मणि रमते चित्तं,
नन्दति नन्दति नन्दत्येव

कोई योग में लगा हो या भोग में, संग में आसक्त हो या निसंग हो, पर जिसका मन ब्रह्म में लगा है वो ही आनंद करता है, आनंद ही करता है।

भगवद् गीता किञ्चिदधीता,
गङ्गा जललव कणिकापीता।
सकृदपि येन मुरारि समर्चा,
क्रियते तस्य यमेन न चर्चा

जिन्होंने भगवदगीता का थोडा सा भी अध्ययन किया है, भक्ति रूपी गंगा जल का कण भर भी पिया है, भगवान कृष्ण की एक बार भी समुचित प्रकार से पूजा की है, यम के द्वारा उनकी चर्चा नहीं की जाती है।

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं,
पुनरपि जननी जठरे शयनम्
इह संसारे बहुदुस्तारे,
कृपयाऽपारे पाहि मुरारे

बार-बार जन्म, बार-बार मृत्यु, बार-बार माँ के गर्भ में शयन, इस संसार से पार जा पाना बहुत कठिन है, हे कृष्ण कृपा करके मेरी इससे रक्षा करें।

रथ्या चर्पट विरचित कन्थः,
पुण्यापुण्य विवर्जित पन्थः।
योगी योगनियोजित चित्तो,
रमते बालोन्मत्तवदेव।

रथ के नीचे आने से फटे हुए कपडे पहनने वाले, पुण्य और पाप से रहित पथ पर चलने वाले, योग में अपने चित्त को लगाने वाले योगी, बालक के समान आनंद में रहते हैं।

कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः,
का मे जननी को मे तातः।
इति परिभावय सर्वमसारम्
विश्वं त्यक्त्वा स्वप्न विचारम्

तुम कौन हो, मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, मेरी माँ कौन है, मेरा पिता कौन है? सब प्रकार से इस विश्व को असार समझ कर इसको एक स्वप्न के समान त्याग दो।

त्वयि मयि चान्यत्रैको विष्णुः,
व्यर्थं कुप्यसि मय्यसहिष्णुः।
भव समचित्तः सर्वत्र त्वं,
वाञ्छस्यचिराद्यदि विष्णुत्वम्।

तुममें, मुझमें और अन्यत्र भी सर्वव्यापक विष्णु ही हैं, तुम व्यर्थ ही क्रोध करते हो, यदि तुम शाश्वत विष्णु पद को प्राप्त करना चाहते हो तो सर्वत्र समान चित्त वाले हो जाओ।

परमपद

(जीव का अपना असली घर)

साभार : गीता साधक संजीवनी

ईश्वर अंश जीव अविनाशी।
चेतन अमल सहज सुख रासी।।

प्रत्येक जीव चाहे वह कितना भी छोटा हो, ईश्वर का ही एक अंश है। वह जीव अविनाशी है, कभी नष्ट नहीं होता है, चेतन है, मल रहित है। यह जीव ईश्वर की तरह स्वभाव से ही सुखों का खजाना, स्वभाव से ही आनन्दित है। लेकिन जब यह शरीर को ही अपना सब कुछ मानने लग जाता है तो शरीर के सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख मानकर अपने वास्तविक आनन्द को भूल जाता है और सुखी-दुःखी होने लगता है। वास्तव में तो संसार के सम्बन्ध के कारण सुख और दुःख कहना पड़ रहा है, जीव की अपनी स्वतस्वाभाविक स्थिति में न तो सुख है और न ही दुःख है, वहा केवल आनन्द ही है। यहाँ सुख रासी शब्द आनन्द के लिये कहा गया है।

आत्मा की उस स्थिति को जहाँ सुख-दुःख का लेशमात्र भी नहीं हो, केवल उसका स्वभाविक आनन्द ही आनन्द हो, उसे परम पद, परमधाम कहते हैं। ज्ञान की भाषा में इसे मुक्ति और भक्ति की दृष्टि में उसे भगवद् धाम कहा जाता है। यह जीव का अपना असली घर है, उसका स्वभाविक स्थान है। जीव ने भूल के वश होकर शरीर को अपना मान लिया। यह मान्यता करोड़ों-करोड़ों जन्मों से इतनी दृढ़ हो गई कि अब यही वास्तविक लगने लगी। लेकिन जब भगवतकृपा से, संतकृपा से, सतसंग से, भक्ति से एक बार जीव की यह भूल मिट जाती है तो वह सदा-सदा के लिये अपने आनन्दित स्वरूप में आ जाता है, फिर वहाँ से वापिस नहीं लौटता है

जिस अविनाशी पद को भक्तलोग प्राप्त होते हैं, वह अविनाशी पद कैसा हैं, इसका भगवान् गीता के श्लोक 15/6 में इस प्रकार विवेचन करते हैं-

न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ।।

उस (परमपद)-को न सूर्य, न चन्द्र (और) न अग्नि ही प्रकाशित कर सकती है (और) जिसको प्राप्त होकर (जीव) लौटकर (संसार में) नहीं आते, वही मेरा परम धाम है।

'न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः' दृश्य जगत् में सूर्य के समान तेजस्वी, प्रकाशस्वरूप कोई चीज नहीं है। वह सूर्य भी उस परमधाम को प्रकाशित करने में असमर्थ है, फिर सूर्य से प्रकाशित होने वाले चन्द्र और अग्नि उसे प्रकाशित कर ही कैसे सकते हैं!

परमात्मतत्त्व चेतन है और सूर्य, चन्द्र तथा अग्नि जड़ (प्रकृति) हैं। ये सूर्य, चन्द्र और अग्नि क्रमशः नेत्र, मन और वाणी को प्रकाशित करते हैं। ये तीनों (नेत्र, मन और वाणी) भी जड़ ही हैं। इसलिये नेत्रों से उस परमात्मतत्त्व को देखा नहीं जा सकता, मन से उसका चिन्तन नहीं किया जा सकता और वाणी से उसका वर्णन नहीं किया जा सकता, क्योंकि जड़ तत्त्व से चेतन परमात्मतत्त्व की अनुभूति नहीं हो सकती। वह चेतन (प्रकाशक) तत्त्व इन सभी प्रकाशित पदार्थो में सदा परिपूर्ण है। उस तत्त्व में अपनी प्रकाशकता का अभिमान नहीं है।

चेतन जीवात्मा भी परमात्मा का ही अंश होने के कारण 'स्वयं प्रकाशस्वरूप' है, अतः उसको भी जड़ पदार्थ (मन, बुद्धि, इन्द्रियाँ आदि) प्रकाशित नहीं कर सकते। मन, बुद्धि, इन्द्रियाँ आदि जड-पदार्थो का उपयोग (भगवान के नाते दूसरों की सेवा करके) केवल जड़ता से सम्बन्ध-विच्छेद करने में ही है।

एक बात ध्यान देने की है कि यहाँ सूर्य को 'भगवान' या 'देव' की दृष्टि से न देखकर केवल प्रकाश करने वाले पदार्थों की दृष्टि से देखा गया है।

तात्पर्य है कि सूर्य तैजस-तत्त्वों में श्रेष्ठ है, अतः यहाँ केवल सूर्य की बात नहीं, प्रत्युत चन्द्र आदि सभी तैजस-तत्त्वों की बात चल रही है। जैसे, दसवें अध याय के सैंतीसवें श्लोकमें भगवान् ने कहा कि 'वृष्णिवंशियों में मैं वासुदेव हूँ', तो वहाँ 'वासुदेव'का भगवान के रूप से वर्णन नहीं, प्रत्युत वृष्णिवंश के श्रेष्ठ पुरुष के रूप से ही वर्णन है।

'यद् गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम'- जीव परमात्माका अंश है। वह जब तक अपने अंशी परमात्मा को प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक उसका आवागमन नहीं मिट सकता। जैसे नदियों के जल को अपने अंशी समुद्र से मिलने पर ही स्थिरता मिलती है, ऐसे ही जीव को अपने अंशी परमात्मा से मिलने पर ही वास्तविक, स्थायी शान्ति मिलती है। वास्तव में जीव परमात्मा से अभिन्न ही है, पर संसार के (माने हुए) संग के कारण उसको ऊँच-नीच योनियों में जाना पड़ता है।

यहाँ 'परमधाम' शब्द परमात्मा का धाम और परमात्मा दोनों का ही वाचक है। यह परमधाम प्रकाशस्वरूप है। जैसे सूर्य अपने स्थान-विशेष पर भी स्थित है और प्रकाशरूप से सब जगह भी स्थित है अर्थात् सूर्य और उसका प्रकाश परस्पर अभिन्न हैं, ऐसे ही परमधाम और सर्वव्यापी परमात्मा भी परस्पर अभिन्न हैं।

भक्तों की भिन्न-भिन्न मान्यताओं के कारण ब्रह्मलोक, साकेत धाम, गोलोक धाम, देवीद्वीप, शिवलोक आदि सब एक ही परमधाम के भिन्न-भिन्न नाम हैं। यह परमधाम चेतन, ज्ञानस्वरूप, प्रकाशस्वरूप और परमात्मस्वरूप है।यह अविनाशी परमपद आत्मरूप से सबमें समानरूप से अनुस्यूत (व्याप्त) है। अतः स्वरूप से हम उस परमपद में स्थित हैं ही, परन्तु जड़ता-(शरीर आदि-)से तादात्म्य, ममता और कामना के कारण हमें उसकी प्राप्ति अथवा उसमें अपनी स्वाभाविक स्थिति का अनुभव नहीं हो रहा है।

परिशिष्ट भावः- हम भगवान के अंश हैं- **ममैवांशो जीवलोके** (गीता 15/7)। इसलिये भगवान का जो धाम है, वही हमारा धाम है। इसी कारण उस धाम की प्राप्ति होने पर फिर लौटकर संसार में नहीं आना पड़ता। जब तक हम अपने उस धाम में नहीं जायँगे, तब तक हम मुसाफिर की तरह अनेक योनियों में और अनेक लोकों में घूमते ही रहेंगे, कहीं भी ठहर नहीं सकेंगे। अगर हम ऊँचे-से-ऊँचे ब्रह्मलोक में भी चले जायँ तो वहाँ से भी लौटकर आना पड़ेगा- **आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन** (गीता 8/16)।' कारण कि यह सम्पूर्ण संसार (मात्र ब्रह्माण्ड) परदेश है, स्वदेश नहीं। यह पराया घर है, अपना घर नहीं। विभिन्न योनियों में और लोकों में हमारा घूमना, भटकना तभी बन्द होगा, जब हम अपने असली घर में पहुँच जायँगे।

परमपद को प्राप्त होकर फिर लौटकर संसार में न आने की बात गीता में तीन जगह कही गयी हैं

1-**यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम** (8/21)

2-**ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः।** (15/4)

3-**यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।** (15/6)

भगवान् ने ज्ञानमार्ग में तो अपुनरावृत्ति की प्राप्ति बतायी है- **गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः** (गीता 5/17), पर भक्तिमार्ग में अपने धाम की प्राप्ति बतायी हैं। यह भक्तिकी विशेषता है! भगवान के धाम में प्रेम का विशेष आस्वादन होता है।

परमपद को न तो आधिभौतिक प्रकाश (सूर्य, चन्द्र आदि) प्रकाशित कर सकता है और न आधिदैविक प्रकाश (नेत्र, मन, बुद्धि, वाणी आदि) ही प्रकाशित कर सकता है। कारण कि यह स्वयं प्रकाश है। इसमें प्रकाश्य-प्रकाशक का भेद नहीं है।

'गत्वा' में गति है, प्रवृत्ति नहीं। क्योंकि अंश की अंशी की ओर गति होती है, प्रवृत्ति नहीं। प्रवृत्ति तो परतः होती है, पर....शेष अगले अंक में

श्रीमद्भागवत कथा

(गोवत्स श्री विट्ठलकृष्ण जी महाराज)

.......पिछले अंक से आगे

असंख्य जन्मों का भाग्य उदय होता है, बहु जन्मों के पुण्य जो है वह संचित होते हैं तब जाकर के परमात्मा की प्राप्ति होती है। तब जाकर के परमात्मा की प्राप्ति कराने वाले संतों से मिलन होता है। संत मिलन इतना सरल नहीं है। हम लोगों को तो सहजता में मिल गये, इसलिए इतना अनुभव नहीं है और वह जो सत्संग है न, उस संत का जो संग है वही अज्ञान मोह माया इत्यादि का नाश उस संग से ही हो जाता है।

प्रसङ्गमजरं पाशं आत्मनः कवयो विदुः ।
स एव साधुषुकृतो मोक्षद्वारं अपावृतम् ।।

विवेकीजन संग या आसक्ति को ही आत्मा का अच्छेद्य बंधन मानते हैं, किन्तु वही संग या आसक्ति जब संतों-महापुरुषों के प्रति हो जाती है तो मोक्ष का खुला द्वार बन जाती है। यह जो संतों का संग है ना एक कृपाण है। किसके लिए? काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, मात्स्र्य के नाश के लिए।

अब भक्ति के कष्ट की निवृत्ति के लिए श्रीमद् भागवत जी की कथा का स्थल बताया है। श्री नारद जी को बताया कि हे देवर्षि नारद! ऐसी जगह कथा हो गंगा द्वार, गंगाजी के समीप हो और नव कोमल बालूका हो जहाँ पर कोमल-कोमल बालूका हो ताकि यह गद्दों की, तकियों की जरूरत नहीं पड़े। पहले लोग कोमल-कोमल बालू में बैठते होंगे इसलिए कुछ तकलीफ भी नहीं होती होगी। आज तो न जाने कितने रोग हो रहे हैं। इस कोमल-कोमल पर सोने से ही रोग होते है महाराज जी।

हरिद्वार में सत्संग रखा है। गंगा द्वार, हरिद्वार को गंगा द्वार कहा गया है। भगवान हरि का हरिद्वार। हरिद्वार में कथा रखने का एक यही भाव है कि पूज्य महाराज जी एक बार बोले थे कि हिमालय के ऊपर के जो योगी हैं वे कलियुग में ज्यादा नीचे नहीं आते हैं। कलयुग में तो हरिद्वार तक वे लोग नीचे उतर सकते हैं और नीचे के जो लोग हैं वे ज्यादा ऊपर नहीं जा सकते हरिद्वार तक जा सकते हैं। दोनों का संगम एक स्थान पर हो जाए इसलिए हरिद्वार में कथा रखी।

सभी को न्योता दिया है श्रीमद्भागवत जी की मंगलमय कथा का। न्योता कैसे देना चाहिए? जैसे अपनी बेटी की शादी हो, अपने बेटे की शादी हो ऐसे न्योता देना चाहिए। एक-एक को पीले चावल भेजने का जो हमारे उधर राजस्थान प्रथा है। घर में पीले चावल करके एक ब्राह्मण देवता को पीले चावलों की एक पोटली भर के देते हैं और वे जिन-जिनको बुलाना होता है विवाह में उनके घर-घर जाकर पीले चावल से न्योता देकर आते हैं। अब आजकल तो विवाह की पत्रिकाएं छपवाकर उसमें पीले चावल रख देते हैं।

इसी प्रकार कथा में प्रयास पूर्वक सभी को लाना चाहिए और महाराज वह दिव्य आयोजन हरिद्वार में होने जा रहा है जिसकी तैयारी के लिए श्री देवर्षि नारद सभी ऋषियों को बुला रहे हैं। भृगु, वशिष्ठ, व्यवन, गौतम, देवल, देवव्रत, राम, सुत, साकल उनके साथ-साथ जितने शौनकादि ऋषि हैं वे सभी सहपुत्र शिष्य और जिनकी पत्नियाँ हैं वे पुत्र-पुत्रियों और शिष्यों के साथ आवे और जिनके शिष्य हैं वे शिष्यों के सहित सभी को आने का न्योता दिया है। सभी वेदों को, वेदांत, उपनिषद, गंगा आदि नदियाँ को, हमारे सभी पर्वत हैं उनको भी न्योता दिया है।

अब जैसे ही कथा की तैयारी पूर्ण हो गई ऐसे ही वे चार ब्रह्मऋषि कुमार, सनकादि कुमार वहाँ आकर के विराजमान हो गए हैं। एक भाग में ऋषि लोग बैठे हैं, एक भाग में जो सद्गृहस्थ संत हैं जो सब परिवार वाले हैं वे बैठ गए हैं और जय शब्द के

साथ, नमः शब्द के साथ, शंख शब्द के साथ श्रीमद् भागवत जी की कथा का आरंभ हुआ है। यह जीव तब तक इस संसार के चक्कर में घूमता रहता है जब तक श्रीमद्भागवत जी की कथा का एक शब्द भी उसके कान में नहीं पड़ता है तब तक।

तात संसारचक्रेऽस्मिन् भ्रमतेऽज्ञानतः पुमान् ।
यावत् कर्णगता नास्ति शुकशास्त्रकथा क्षणम्।।
किं श्रुतैबहुभिः शास्त्रैः पुराणैश्च भ्रमावहैः ।
एकं भागवतं शास्त्रं मुक्तिदानेन गर्जति ।।

अरे आप क्या पढ़ पाओगे, 18 पुराण, वेद, उपवेद, महाभारत जैसा ग्रंथ है पूरे जीवन में कोई आदमी पढ़ता रहे तब भी नहीं पढ़ सकता। पढ़ सकता है क्या? हमारे मलूकपीठ वाले महाराज जी को देख लो उनको जब भी अवसर मिलता है कमरा बंद करके पुस्तक खोलकर विराजते हैं। ऐसी बात तो है नहीं कि उन्होंने शास्त्र नहीं पढ़ा होगा। परन्तु व्यक्ति को यह भूख जो है ना पढ़ने वाली- एक बार, दो बार, तीन बार, चार बार न जाने कितनी बार भागवत जी पड़ी होगी फिर भी अभी पढ़ते हैं मूल पारायण। इसलिए इतने शास्त्र ना हम पढ़ पाएंगे तो श्रीमद भागवत जी की शरण ग्रहण कर लें। यह श्रीमद् भागवतजी की की शरण होने के फल का वर्णन बता रहे हैं। श्रीमद् भागवतजी की कथा सुनने का फल बता रहे हैं।

इसके श्रवण मात्र से कितना पुण्य प्राप्त होता है? अश्वमेध यज्ञ! जिस व्यक्ति ने सुखदेवजी की भागवतजी सुनी है उसके द्वारा इतना बड़ा तप कर लिया गया। उसके द्वारा इतना बड़ा बिन यज्ञ ही पुण्य कर लिया गया। न गंगा न गया न पुष्कर न प्रयाग। सुखशास्त्र के समान कोई श्रेष्ठ नहीं और तो और महाराज ज्यादा कुछ भी यदि भागवत जी में नहीं याद कर सकते संस्कृत पढ़े लिखे नहीं है तब सनकादि ऋषि यह भी कह रहे हैं कि एक श्लोक न बोल सको तो आधा श्लोक, आधा भी न बोल सको तो चौथाई श्लोक- श्री कृष्णाय वयं नमः। इतने से ही कल्याण हो जाएगा और महाराज कथा के समय जो व्यास देवता है उनको ऊंचे आसन पर विराजमान करके कथा श्रवण करते हैं तो वे ध्रुपद को प्राप्त होते हैं। और जिसने कथा नहीं सुनी वह तो अपनी मां की गोद में अपनी मां को भार देने के लिए ही आया है।

आजन्ममात्रमपि येन शठेन किंच्चितम विधाय शुकशास्त्रकथा न पीता।
चाण्डालवच्च खरवद्वत तेन नीतं मिथ्या स्वजन्म जननीजनिदुःखभाजा।।

जिसने एक क्षण के लिये भी सुखशास्त्र भागवत जी का श्रवण नहीं किया है वह अपनी मां को ऐसे ही बोझ देने के लिए पृथ्वी पर आया था। इसलिए येनकेन प्रकारेण श्रीमदभागवत जी की कथा के श्रवण के प्रयास करने चाहिए।

अब महाराज जैसे ही श्रीमद् भागवत जी की कथा प्रारंभ हुई है-

भक्तिः सुतौ तौ तरूणौ गृहीत्वा प्रेमैकरूपा सहसीऽऽविरासीत्।
श्री कृष्ण गोविंद हरे मुरारे नाथेति नामानि मुहुर्वदन्ति।।

अब जैसे ही श्रीमदभागवतजी की कथा प्रारंभ हुई है वहाँ स्वयं बिना बुलाए ही भक्ति अपने दोनों पुत्रों ज्ञान और वैराग्य के साथ प्रकट हो गई है। सभी लोग आश्चर्य कर रहे हैं कि अचानक कहाँ से टपक पड़े? सब आपस में चर्चा कर रहे हैं कि बिना बुलाये ये कहाँ से आ गए? **कथम् प्रविष्टा कथमागतेयं**, कहाँ से इन्होंने प्रवेश किया और क्यों आई? अब वह आ करके हाथ जोड़ करके भक्ति महारानी खड़ी हो गई है और प्रार्थना कर रही है, पूछ रही है कि मैं कहाँ जाऊँ? **भक्तेषु गोविंदस्वरूपकत्री प्रेमैकधर्त्री भवरोगहन्त्री**। बोले मेरा स्थान कौनसा है? तो बोले **निरंतरम् वैष्णवमानसानी**। आपका स्थान? ये जितने बैठे हैं इन भक्तों के मन में आपका...शेष अगले अंक में

जाऊँ तो जाऊँ कहाँ?

(अम्बा लाल सुथार, सम्पादक)

(एक गोमाता और बछड़े की दर्द भरी कहानी)

पिछले अंक से आगे.......

शिवाः माँ मैं तो बहुत थक गया हूँ। मुझे ठण्ड लग रही है। भूख भी लगी है। आगे कैसे चलूंगा? थोड़ा रुक जा यहाँ। मुझे दूध पिला।

गोमाताः नहीं बेटा! हिम्मत मत हारो। अभी बस थोड़ा ही रास्ता बचा है। फिर हमको कहीं आसरा मिल जायेगा। थोड़ा दूध पी ले। बस अभी देखते-देखते पार हो जायेंगे।

शिवा दूध पीने लगता है। हालांकि गोमाता स्वयं भूखी है, पांवों में पीड़ा भी है तो दिनभर दूध कहाँ से होगा, पर थन मुँह में लेकर थोड़ी देर चूसता है और थोड़ा खुश हो जाता है। अब गोमाता उसे आगे नदी पार करने हेतु प्रेरित करती है।

गोमाता - चलो बेटा! अब मेरे पीछे-पीछे आ जाओ। नदी में गहरा पानी आने पर पांव हिलाते रहना तो तैरकर हम पार हो जायेंगे।

यह कहकर गोमाता नदी में प्रवेश करती है। शिवा भी माँ के पीछे-पीछे नदी में उतर जाता है। वह तो बहुत भोला है, उसे कुछ पता नहीं कि कैसे डूबते हैं, कैसे तैरते हैं। उसे तो केवल बस माँ के पीछे चलना आता है। आगे नदी गहरी होती जा रही है और पानी की धारा का वेग भी बहुत तेज हो रहा है। उसमें प्रवेश करते ही गोमाता डगमगाने लगती है, मगर शिवा तो कुछ समझता नहीं है तो वो भी पीछे पीछे तेज धारा में प्रवेश कर जाता है। प्रवेश करते ही वो फूल की तरह धारा के साथ बह गया। गोमाता ने उसके आगे जाकर रोकने का प्रयास किया मगर वो तो पलक झपकते ही काफी आगे चला गया। उसको कुछ भी समझ में नहीं आया तो उसने अपने को जल धारा के हवाले कर दिया।

काफी दूर जाने के बाद नदी का पाट बहुत चौड़ा हो गया वहाँ पानी की गहराई और वेग दोनों बहुत कम हो गये। वहाँ शिवा ने पांव टिकाये और खड़ा होकर बाहर किनारे पर आ गया। चारों तरफ देख रहा है कि माँ कहाँ है, मैं कहाँ आ गया?

उधर गोमाता भी ज्यों-त्यों कर नदी के पार हो जाती है। मगर अपने वत्स शिवा को नहीं पाकर बाहर खड़ी-खड़ी बहुत रोती है। शिवा अब पानी में जाता हुआ कहीं दिखाई नहीं दे रहा है। गोमाता लंगड़ाती हुई नदी किनारे जिधर शिवा गया उधर रवाना हो जाती है। दूर चलने के बाद गोमाता निराश हो जाती है और शिवा के बारे में सोच-सोच कर रोती रहती है, मेरा बेटा कैसा होगा, कहाँ होगा? जीवित भी रहा होगा या नहीं? पर यहाँ दोनों की कौन सहायता करे? बरसात बंद हो गई है। दिनभर अपने बच्चे के खोने के दुःख से दुःखी होकर कुछ दूरी तक चलने के बाद पांवों की अत्यधिक पीड़ा के कारण वहाँ नदी किनारे बैठ जाती है और मन ही मन अपने लाल को पुकारती रही।

गोमाताः ओ मेरे वत्स! अब तो आजा।
ओ मेरे लाल आजा, ओ मेरे लाल आजा।
गले तुझे लगा लूं, हृदय में तुझे छुपा लूं।
ओ मेरे दिल के टुकड़े, गोमाता के प्यारे,
सुन ले कि तेरी माँ जिन्दा है तेरे सहारे।
तेरे लिये हूँ पागल, आखिर लाल है तूं मेरा।
जग में रहे तूं जिन्दा, उजड़े न घर मेरा।
ओ मेरे लाल, ओ मेरे प्यारे अब तो आजा।
प्राण जो निकलने को है, कर रहे इंतजार तेरा।
एक बार तूं आकर, भोला मुखड़ा दिखा दे तेरा।

शिवा बाहर निकलकर नदी के किनारे खड़ा होकर सोचता है-माँ कहाँ होगी? कैसी होगी? भगवत प्रेरणा से उसकी समझ काम करती है। नदी के किनारे-किनारे जिधर से तैरकर आया उधर चलने लगता है। कभी अकेला रहा नहीं, बहुत छोटा है मगर जब भाग्य ने उसे

अकेला कर दिया तो हिम्मत करके माँ को ढूंढ़ने निकलता है। माँ को मन में पुकारता है:

तू कितनी अच्छी है, तू कितनी भोली है,
प्यारी-प्यारी है, ओ माँ ओ माँ।
ये जो दुनिया है, यह वन है कांटों का,
तू फुलवारी है, ओ माँ ओ माँ।।

उधर गोमाता भी उसको ढूढ़ते हुए उसकी तरफ आती है। संध्या को दोनों आमने सामने होते हैं, मगर एक नदी के इस किनारे तो दूसरा उस किनारे। दोनों आमने सामने खड़े हैं, बीच में गहरी नदी है। गोमाता अपने वत्स को देखकर बहुत प्रसन्न होती है मगर मिलने में असमर्थ जानकर रोती है- मैं इस पार, तू उस पार, बीच बहे बस अश्रु धार। गोमाता हिम्मत कर नदी पार करने की सोच रही थी, इतने में उधर से 5 गो रक्षक आते हैं। वे शिवा के पास जाते हैं और उसे प्रेम से सहलाते हैं। वो प्रसन्न हो जाता है। यह देखकर गोमाता को अपने प्रिय सेवकों पर विश्वास हो जाता है। एक गोरक्षक कमर में हवा भरा हुआ ट्यूब डालकर रस्सी कमर के बांधकर व बछडे को अपने कंधे पर उठाकर नदी में उतर जाता है। रस्सी का दूसरा सिरा उसके साथियों ने पकड़ रखा है। गोरक्षक शिवा को उसकी माँ से मिलवा देते हैं। माँ उनको आशीर्वाद देती है।

देश भर में गोमाता की रक्षा के लिये हजारों गोरक्षक ऐसे ही अपने प्राणों की चिन्ता किये बिना कभी कुए में, कभी नहरों में, कभी नदी नालों में उतरकर गोवंश के प्राणों को बचा लेते हैं। इनको समाज या सरकार ने नियुक्त नहीं किया है और न ही कोई इनको वेतन देता है। देशभर में ऐसे हजारों स्व प्रेरित गोसेवक-गोरक्षक गोसेवा में लगे हुए हैं जो कसाइयों की गोलियों और राजा की गालियों एवं जेल की चक्की पीसकर भी डटे हुए हैं। उनको किसी से कोई मतलब नहीं, वे तो केवल अपनी गोमाता की रक्षा कैसे कर सकें इसका ध्यान रखते हैं।

शिवा माँ का दूध पीता है। गोमाता के पांव बहुत खराब हो चुके हैं। गोरक्षक जब यह देखते हैं तो वे उपचार का निश्चय करते हैं। वे शहर से फोन कर एक टेम्पो बुलाते हैं। थोड़ी देर में टेम्पो आ जाता है। माँ बेटे को टेम्पो में चढ़ा देते है। ये गोरक्षक शहर में एक छोटा सा उपचार केन्द्र चलाते हैं। वहाँ ले जाकर गोमाता और शिवा को उतार देते हैं। यहाँ इनके चारे पानी की व्यवस्था की गई। गोमाता को बांधकर नीचे बिठाया और पांवों से हजारों कीड़े निकाले गये और फिर मरहम-पट्टी कर दी। इससे गोमाता को इतनी शांति मिली जिसकी हम कल्पना नहीं कर सकते। कई महीनों से उसको रात-दिन कीड़े खाये जा रहे थे। खुरों में मांस खा-खाकर बहुत गहराई तक अंदर घुस गये थे। ऐसी देशभर में हजारों-लाखें गोमाताएं होगी जो पीड़ा को रात-दिन सहन कर जीवन गुजार रही है। लोग तो आजकल अपने घर की गाय का भी ढ़ंग से उपचार नहीं करवाते, निराश्रित का उपचार तो कोई गोपाल-गोविन्द के प्यारे ही करवाते हैं।

यहाँ 45 दिनों तक लगातार उपचार के बाद गोमाता के पांव पूर्ण सही हो गये। थनों के उपचार का प्रयास किया गया मगर देरी हो जाने के कारण उपचार नहीं हो सका। इन गोसेवकों के पास शहर में बहुत ही सीमित जगह है, इस कारण उपचार के बाद एकदम सही होने वाले गोवंश को पुन: छोड़ दिया जाता है। अत: इस गोमाता को और शिवा को भी अपने केन्द्र के कुछ दूरी पर शहर में ले जाकर छोड़ दिया। कुछ दिन शिवा ने सुखपूर्वक दो समय चारा-पानी पाया, मगर किस्मत ने फिर माँ-बेटे को निराश्रित कर दिया। अब ये दोनों घर-घर रोटी की भिक्षा के लिये शहर में दर-दर भटकने लगे। कोई गोभक्त मिलता तो रोटी देता, बाकी लोग गालियों और डण्डे देते।

भरपेट भोजन न मिलने के कारण माँ-बेटा दोनों कचरा और गंदगी खाकर एवं नालियों का गंदा पानी पीकर अपना जीवन चलाने लगे। किसी भी प्राणी के लिये भूख एक ऐसी विपदा है जो उसको कुछ भी खाने के लिये मजबूर कर देती है।...अगले अंक में

क्या हमको शुद्ध सात्विक आहार मिल रहा है?

(अम्बा लाल सुथार, सम्पादक)

वर्षो से हम संतों से सुनते आये हैं और शास्त्रों में पढ़ते आये हैं कि गोसेवा से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। आज जिस प्रकार घर-घर गाड़ी रखने का प्रचलन है, ऐसे ही हमारी पूर्व की पीढ़ियों में घर-घर गोमाता रखने का प्रचलन था। गाय परिवार का अभिन्न अंग थी। शहर हो या गाँव, ऐसे घर-परिवार गिने-चुने ही होते थे जिनके घर पर दो-चार गोमाताएं नहीं हो। कमजोर से कमजोर और हिम्मत हारा हुआ दुर्बल व्यक्ति ही होगा जिसके घर की शोभा गाय नहीं बढ़ाती थी। जब दो परिचित आपस में मिलते तो पहला समाचार ही यह पूछा जाता था कि घर पर कितनी गोमाताएं दूध दे रही है?

आज सब कुछ बदल गया है। सुबह उठते ही सबसे पहले व्यक्ति चाय बनाने के लिये डेयरी की थेली लेने भागता है या कोई दूधिया दूध देने आता है। हमको इन दोनों स्रातों से मिलने वाला दूध क्या सही दूध है या हम दूध के नाम पर जहर पी रहे हैं? आप सभी के जीवन का यह अनुभव है कि आज समाज में अधिकतर लोग अपने व्यवसाय धन्धे में बेईमानी करते हैं। मनुष्य दो रुपयों के लिये ठगी करते देर नहीं करता है तो हम जो घी, दूध, दही, छाछ, मिठाई ले रहे हैं वो भी निश्चित ही मिलावटी ही है। वर्तमान में भारत में जितनी दूध की खपत है, उत्पादन उसका आधा ही नहीं हो रहा है, फिर भी बाजार में जितना चाहें उतना दूध, दही, घी, मिठाइयों आदि मिल रहे हैं। इस पर गम्भीरता से विचार करें, बेवकूफ की तरह उपलब्ध वस्तुओं का उपयोग न करें।

मनुष्य का पहला सुख निरोगी काया है। तन और मन से निरोगी रहने के लिये सबसे पहली आवश्यकता है हमारा आहार शुद्ध और सात्विक हो। बड़े दु:ख की बात है कि हमने अपने खानपान को इतना गलत कर दिया है कि बिना कुछ विचार किये केवल पेट भरने के लिये अनर्गल वस्तुएं खाते रहते हैं और कोई समझदार बनकर अच्छे भोजन की तलाश करता भी है तो आज के विज्ञापन और धोखेबाज व्यापारिक जगत उसे मूर्ख बनाकर अशुद्ध वस्तुएं देकर अपनी जेबें भरते हैं। बुद्धिमान से बुद्धिमान व्यक्ति भी इसमें धोखा ही खाते हैं कारण कि वे आम की मांग तो कर रहे हैं, पर कोई आम का पेड़ ही नहीं लगाता, पेड़ सब आक और बबूल के लगा रहे हैं। हमारी बुद्धिमता तो मांग तक ही पहुँच रही है, सप्लाई करने वाले के पास आपकी चाही गई वस्तु है ही नहीं और जहाँ है वहाँ तक आप पहुँच नहीं रहे हो तो ठगी का शिकार होना ही है। अच्छा आज हम शुद्ध सात्विक दूध, घी और मिठाई की चर्चा करते हैं।

शुद्ध दूध वो है जिसमें कोई मिलावट न हो और सात्विक दूध केवल वेदलक्षणा भारतीय नस्लों की गोमाताओं से प्राप्त होता है। अत: शुद्ध और सात्विक दूध केवल भारतीय नस्ल की गोमाता ही देती है। केवल वेदलक्षणा गोमाता के दूध से ही शुद्ध और सात्विक घी और मिठाई बन सकते हैं। अब आप विचार कर लें कि आप पैसा देकर भी क्या शुद्ध और सात्विक घी, दूध, दही, छाछ, मक्खन, मिठाई आदि प्राप्त कर रहे हैं? धन-दौलत होते हुए भी आप अपने परिवार को यदि गोमाता के अमृत रूपी दूध, दही, घी, मक्खन, छाछ, मिठाई आदि परम पवित्र और शुद्ध सात्विक पदार्थ नहीं खिला रहे हो तो आपका परिवार अभागा है और आप पाप के भागीदार बन रहे हो।

गोमाता का अमृत तुल्य प्रसाद गोमाता की सेवा से जुड़ने से मिलने लगेगा। आप जहाँ भी हो, निराश्रित गोवंश की सेवा करें, किसी गोसेवी संस्था में सहयोग कर गोसेवा करें। गोसेवा करने से हमें शुद्ध सात्विक आहार, गोमाता और संतों का मंगलमय आशीर्वाद एवं् प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त होती है।

अभिनव व्रजमण्डल में 22 से 31 अक्टूबर 2025 तक आयोजित होगा वेदलक्षणा गो नवरात्र आराधना महोत्सव

।।श्रीसुरभ्यै नमः।।

! वेदलक्षणा गो नवरात्र आराधना महोत्सव !

संवत् 2082 कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक

आदरणीय गोभक्त महानुभाव! यह जानकर आप अत्यन्त आनन्दित होंगे कि संवत् 2082 कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से अक्षय नवमी पर्यन्त आपके अपने अभिनव ब्रजमण्डल में वेदलक्षणा गो नवरात्र आराधना महोत्सव का अलौकिक आयोजन होने जा रहा है। जिसमें सुरभि महायज्ञ, गोभक्ति पाठशाला एवं गोचारण लीलाओं के मंगलमय दैनिक कार्यक्रम सम्पन्न होंगे।

वेदलक्षणा गो आराधना महोत्सव में श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के आजीवन सदस्य, गोप्रेमी संत, गोउपासक विद्वान, गोभक्त धर्मात्मा भाई-बहन तथा गोवत्स-गोवत्सा किशोर-किशोरियों सम्मिलित होकर सुरभि उपासना का अपूर्व आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास के समस्त आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि इस अपूर्व आयोजन में आदि शक्ति माँ सुरभि का वात्सल्यमय आशीर्वाद एवं श्री गोपाल गोवर्धनाथजी का दिव्य प्रेम प्राप्तियर्थ अभिनव ब्रजमण्डल सपरिवार एवं ईष्ट मित्रों सहित अवश्य पधारिए। अपने आगमन की सूचना शरद पूर्णिमा तक समन्वय कार्यालय को अवश्य दीजिये।

इस वर्ष गो नवरात्र आराधना महोत्सव में आदि शक्ति सुरभि उपासना षडक्षर मंत्र का सवा लाख जपयज्ञ तथा शारीरिक शुद्धिकरण के साथ लघु दुग्ध कल्प का अपूर्व अवसर भी प्राप्त हो रहा है। अतः जो-जो गोभक्त सज्जन भाई बहिन दिनांक 22 से 31 अक्टूबर पर्यन्त इस नव दिविसीय आशीर्वाद एवं आरोग्य के अनुपम संगम में जपयज्ञ अथवा लघु दुग्धकल्प में सम्मिलित होना चाहते हैं वे ऑन लाईन तथा ऑफ लाईन अविलंब अपना पंजीयन कराएं।

आयोजक :श्रीगोधाम महातीर्थ पथमेडा
स्थान : अभिनव व्रजमण्डल मनोरमा गोलोक
नंदगांव केसुआ रेवदर सिरोही राजस्थान
संपर्क- 7742093200, 97606335735

दिल्ली एनसीआर में गूंजा गोमाता का जय-जयकारा

7 से 21 सितम्बर तक दिल्ली में आयोजित हुआ गो ज्योति दर्शन एवं गोपुछ तर्पण यात्रा कार्यक्रम

पूज्या गोमाता की कृपा से एवं श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास के संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद जी महाराजश्री की पावन प्रेरणा से श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के तत्वाधान में श्राद्ध पक्ष में गो ज्योति दर्शन एवं गोपुछ तर्पण यात्रा के अंतर्गत दिल्ली एन.सी.आर. में विभिन्न स्थानों पर यह 15 दिवसीय कार्यक्रम आयोजित हुए तथा दिल्ली वासी गोभक्तों को घर बैठे अपने पितरों के तर्पण का सुअवसर प्राप्त हुआ। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा से अखंड गोज्योतिजी एवं छोटी छोटी पुंगनुर गोमाता शिवशक्ति एवं गणेश नंदी भैय्या गो ज्योतिरथ में दिल्ली पहुंचे। श्री प्रशांत विहार बालाजी मन्दिर में

गुरु माँ सुमनजी शर्मा के सानिध्य में श्री शिवदयालजी जगवायन परिवार द्वारा पंद्रह दिन तक गोपूजन एवं गोपुच्छ तर्पण का आयोजन रखा गया जिसमें दो सौ से अधिक लोगों ने गोपुच्छ तर्पण एवं हजारों लोगों ने गोपूजन कर गोमाता का मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

7 सितंबर को प्रथम श्राद्ध के दिन सर्व समाज राजस्थानी संघ द्वारा सामुदायिक भवन गुलाबीबाग में श्री गुलाबनाथजी महाराजजी के मुखारविन्द से दिव्य भजन रस वर्षा का आयोजन किया गया। 8 सितंबर को अंतरिक्ष अपार्टमेंट में श्री हरि मंदिर सेवा समिति द्वारा श्री रसराजजी महाराज के मुखारविंद से भव्य सुंदरकांड पाठ का आयोजन संपादित हुआ। 9 सितंबर को तरुण एंक्लेव में श्री राधाकृष्ण मंदिर समिति के द्वारा श्री ब्रजरसिकजी के मुखारविंद से दिव्य श्री राधारानी भजन संध्या का आयोजन संपादित हुआ। 10 सितंबर को श्री शंकरलालजी सिंघल एवं श्री विनयजी सिंघल के माध्यम से नरसिंह सेवा सदन में श्री भगवतकिशोरजी के मुखारविन्द से भक्तिमय श्री पहाड़ी माता कीर्तन का दिव्य आयोजन किया गया। 11 सितंबर को श्री विरेन्द्रजी गर्ग, श्री निमित्तजी गुप्ता एवं श्री हितेशजी गोयल द्वारा पंजाबी बाग क्लब ऑडीटोरियम में अन्तरराष्ट्रीय कवि श्री राजेशचेतनजी के संयोजन में गोराष्ट्र कवि सम्मेलन का सुंदर आयोजन हुआ।

12 सितंबर को श्री मांगीलालजी पारीक एवं श्री एस.एन. बंसलजी के सौजन्य से श्री सनातन लक्ष्मीनारायण मंदिर, गुरु हरिकिशन नगर में पूज्य श्री अजय भैय्याजी के मुखाविन्द से श्री श्याम संकीर्तन का रसमय आयोजन संपादित हुआ। 13 सितंबर को श्री श्याम मंडल पुष्पांजली एंक्लेव द्वारा अग्रवाल भवन, सुविधा कुंज में सुश्री साक्षीजी अग्रवाल के मुखारविंद से भजन संध्या का भक्तिमय आयोजन किया गया। 14 सितंबर को श्री राजेशजी बतरा के सौजन्य से हरियाणा मैत्री भवन में कोलकात्ता के सुप्रसिद्ध भजन गायक श्री राजजी पारीक के मुखारविंद से श्री श्याम भजन संध्या का अनुपम आयोजन हुआ।

15 सितंबर को श्री बिशनसिंहजी राजपुरोहित एवं श्री नरपतसिंहजी आलासन के सौजन्य से ओसवाल भवन, विवेक विहार में श्री यशपालजी गुप्ता के मुखाविन्द से सुन्दर काण्ड का दिव्य पाठ आयोजित हुआ। 16 सितंबर को श्री संजीवजी गर्ग, सन्नीजी जैन, राकेशजी गर्ग, सतीशजी गुप्ता एवं अनिलजी कांडा के सौजन्य से त्रिलोक भवन शालीमार बाग में श्री राहुल चौधरी जी की दिव्य भजन संध्या आयोजित हुई। 17 सितंबर को श्री श्याम मंदिर छोटा खाटू धाम नजफगढ़ में उन्हीं के सौजन्य से श्री बंटू भैयाजी एवं श्री संजयजी पारीक के मुखारविंद से श्री श्याम भजन संध्या का भावपूर्ण आयोजन संपादित हुआ।

18 सितंबर को श्री हंसराजजी रल्हन, श्री संजयजी गोयल एवं श्री जयप्रकाशजी जिंदल के सौजन्य से अग्रवाल सदन मण्डल टाउन में बाबा सत्यनारायणजी मौर्य द्वारा दिव्य चित्रकारी एवं भजन संध्या का आयोजन संपादित हुआ। 19 सितंबर को वेदलक्षणा गोसेवा समिति नरेला द्वारा श्री रामकुटि मंदिर नरेला में श्री राजेशजी शर्मा की भजन संध्या का भावपूर्ण आयोजन संपादित हुआ। 20 सितंबर को श्री कुंज बिहारी सेवा समिति द्वारा वात्सल्य भवन रोहिणी में सुश्री निकुंज कामराजी के मुखारविंद से एक शाम कान्हा के नाम भाव भरा आयोजन रहा। 21 सितंबर को सर्वपितृ अमावस्या के दिन दिल्ली की विशालतम रामलीला श्री रामलीला कमेटी पी यु ब्लॉक प्रीतमपुरा ग्राउंड में श्री रामलीला कमेटी पीतमपुरा एवं श्रीकृष्ण सुदामा मित्र परिवार के सौजन्य से कोलकाता के सुप्रसिद्ध भजन गायक श्री शुभम रूपमजी एवं फतेहाबाद के श्री नरेश नरसीजी के मुखारविन्द से देर रात्रि तक भजन संध्या का क्रम चलता रहा।

इन सभी आयोजनों के लिए दिल्ली एनसीआर कार्यकारिणी द्वारा 40 युवाओं की आयोजन समिति

का गठन किया गया। जिसकी व्यवस्था प्रभारी व सीईओ आलोकजी सिंहल, श्री राजेशजी चेतन, श्री सुरेशजी गर्ग एवं श्री एन आर जैन साहब द्वारा देखी गई। समिति के संयोजक श्री विनयजी सिंहल, सह संयोजक श्री आलोकजी जगवायन, प्रचार मंत्री श्री यशपालजी गुप्ता, समन्वयक श्री राजीवजी केजरीवाल सहित सभी ने मिलकर के इस आयोजन को सफल बनाने में दिन रात प्रयास किया। सभी आयोजनों में न्यूनतम 500 और अधिकतम 2 से 3 हजार गोभक्त उपस्थित रहे। प्रथम बार दिल्ली के आयोजनों में पूर्णरूप से गोवृत्ति भोजन प्रसाद की व्यवस्था की गई। लगभग 10000 गोभक्तों के मध्य गोवर्ती लड्डू प्रसाद, गोमाता और कान्हा का कट आउट तस्वीर व गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा का साहित्य प्रसाद के रूप में वितरित किया गया।

सभी गोभक्तों का यही भाव रहा कि इस यात्रा का क्रम प्रतिवर्ष रहे। इस यात्रा में लगभग 10हजार से अधिक नये लोगों का श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा से परिचय हुआ। 100 से अधिक नए आजीवन सदस्य बने एवं घास चारे, गो आवास की सेवा भी प्राप्त हुई। आयोजन में दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष श्री विजेन्द्रजी गुप्ता सहित राजनीतिक, सामाजिक, व्यापारिक क्षेत्र के प्रबुद्धजनों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया तथा इस आयोजन में सैंकड़ों लोगों ने गोसेवा का संकल्प भी लिया।

इस आयोजन में चैयरमेन श्री राकेश जी बिन्दल, अध्यक्ष श्री विरेन्द्रजी गर्ग, वरिष्ठ वाइस चैयरमेन श्री एस एन बंसल जी, महामंत्री श्री नरेश जी गोयल, कोषाध्यक्ष श्री हरिओम जी तायल, श्री प्रकाश जी कंदोई सहित वरिष्ठ गोभक्तों का पूर्ण सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

सूरत में सम्पन्न हुई भव्य रामकथा

22 से 30 सितम्बर तक सूरत महानगर में आयोजित हुआ नौ दिवसीय श्री राम गोभक्ति महोत्सव

पूज्या गोमाता की कृपा से एवं श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास के संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद जी महाराजश्री की पावन प्रेरणा से श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की सूरत शाखा के तत्वाधान में दिनांक 22 से 30 सितम्बर 2025 पर्यन्त पूज्य गोवत्स श्री राधा कृष्ण जी महाराज के व्यासत्व में सिटी लाईट स्थित अग्रसेन पैलेस के पंचवटी हॉल में श्रीराम गोभक्ति महोत्सव का आयोजन किया गया। यह आयोजन स्वर्गीय गोभक्त श्री गजानंद जी कंसल एवं गोभक्त स्वर्गीय श्री राधावल्लभ जी जालान की स्मृति को समर्पित है।

कथा के मुख्य मनोरथी श्रीमती गीतादेवी श्री गजानंद जी कंसल (कंसल ग्रुप), श्री जयप्रकाश जी अग्रवाल (रचना ग्रुप) एवं श्री सुभाष जी अग्रवाल (सुभाष साड़ी) रहे। कथा में श्रीराम-जानकी विवाह का अपूर्व आयोजन रहा।

इस आयोजन में लगभग 750 गाड़ी हरे चारे की सेवा के संकल्प के अलावा कई आजीवन न्यासी भी बने। आयोजन में अग्रवाल विकास ट्रस्ट के सभी पदाधिकारी, ट्रस्टीगण, एवं समाज के अग्रणी भामाशाहों का सहयोग सराहनीय रहा। साथ ही मारवाड़ गौड़ ब्राह्मण संस्थान, मधुसुदन मित्र मंडल, संकटमोचन सुंदरकांड मंडल, हेल्पिंग हैंण्ड, राजेश्वर महादेव भजन मित्र मंडल, सालासर हनुमान सेवा समिति, रामदेव बाबा प्रेम मंडल, बांके बिहारी सेवा समिति, सिटीलाइट प्रभात फेरी मंडल, मारूतिनंदन सुंदरकांड मंडल आदि संस्थाओं का भी सहयोग रहा।

हिन्दी मासिक पत्रिका ''कामधेनु कल्याण'' स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा'' के लिए प्रकाशक एवं सम्पादक अम्बा लाल सुथार, मुद्रक पुरखाराम पुरोहित चारभुजा प्रिंटिंग प्रेस, गोमाता सर्किल, हाडेचा रोड़ साँचौर से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' पथमेड़ा, तहसील-सांचौर, जिला-जालोर (राजस्थान) 343041 से प्रकाशित।

!! श्री सुरभ्यै नमः !!

गोसेवार्थ सहयोग के प्रकार

1. एक गोमाता को गोद लेकर परिवार का सदस्य बनायें प्रतिवर्ष	रु 21000
2. आओ हरा घास चारा अर्पित करें प्रति गाड़ी	रु 31000
3. आइये सूखे घास चारे की सेवा करें प्रति गाड़ी	रु 1,01,000
4. गोमाता की सेवा में अक्षय भूदान समर्पित करें प्रति बीघा	रु 2,51,000
5. जीवन के साथ भी–जीवन के बाद भी आजीवन गोसेवक बनें प्रति गोवंश	रु 2,51,000
6. गुड़ की एक गाड़ी गोमाता को परोसें सेवा राशि	रु 4,51,000
7. अशक्त गोवंश हेतु पौष्टिक आहार की प्रति गाड़ी सेवा राशि	रु 5,00,000
8. बीमार गोवंश का उपचार करें मासिक सेवा राशि	रु 11,00,000
9. गोधाम द्वारा सेवित गोवंश सेवार्थ एक दिन का पौष्टिक आहार, हरा-सूखा घास चारा अर्पित करें सेवा राशि	रु 35,00,000

NAME - SHRI GODHAM MAHATEERTH PATHMEDA LOK PUNYARTH NYAS

BANK OF BARODA A/C - 08490100023827 | IFSC - BARB0ASHRAM (FIFTH CHARACTOR IS ZERO)

Branch : Ashram Road, Ahmedabad, Mob: 77420 93179, 76650 59999, 70730 00151

कुल पृष्ठ- 36
अक्टूबर 2025

प्रकाशन तिथी : 01 अक्टूबर 2025
कामधेनु कल्याण 20 रुपए

RNI Reg- No - RAJHIN/2022/17167
Postal Reg No : RJ/SRO/9681/2025-2027

गोवर्धननाथजी की

गोचारण लीला

परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दतशरणानंदजी महाराजश्री के पावन सानिध्य में

वेदलक्षणा गो नवरात्र आराधना महोत्सव के पावन अवसर पर

गोचारण लीला का मंगलमय दैनिक कार्यक्रम

22 से 31 अक्टूबर 2025

प्रतिदिन सांय 8 बजे से

live on

GodhamPathmedaOfficial